भटके
मेरा मन बंजारा

बिमला रावर सक्सेना

प्रकाशक

अनुराधा प्रकाशन, नई दिल्ली

ISBN No.: 978-93-85083-21-1

मूल्य	: 250 रु.
प्रथम संस्करण	: जनवरी 2016
कॉपीराइट	: रचनाकार
रचनाकार	: बिमला रावर सक्सेना
प्रकाशक	: अनुराधा प्रकाशन 1193, पंखा रोड, नांगल राया निकट डी2ए जनकपुरी, नई दिल्ली-110046 दूरभाष : 011-28520555 चलभाष : 9213135921
ईमेल	: anuradhaprakashan@gmail.com
वेबसाइट	: www.anuradhaprakashan.com

BHATKE MERA MAN BANJARA by BIMLA RAWAR SAXENA

यह काव्य संकलन मैं अपने

प्रिय पुत्र रवि सक्सेना

एवं

प्रिय पुत्रवधू पल्लवी सक्सेना

को

आशीर्वाद एवम् स्नेह सहित

समर्पित करती हूँ।

माँ

(बिमला रावर सक्सेना)

‘शब्द मसीहा’ की नज़र में
‘भटके मेरा मन बंजारा’

कवितायें आधुनिक ऋचाएं हैं, जिनमें जीवन के अनुभवों का शाब्दिकरण है। यदि अनुभव की भट्टी पर पकाकर शब्दों के पकवान बने हों तो निश्चय ही वे बड़े हितकारी और आत्मसात करने योग्य हो जाते हैं। यूँ तो हर हृदय जब वह प्रसन्न होता है या अत्यधिक दुखी होता है, कुछ अधिक स्पंदित होता है किन्तु उम्र के साथ वह भी नियंत्रण सीख जाता है। पीड़ा भरी होने पर जब उसका दबाव बढ़ जाता है तो स्वतः ही कविता या कथा का झरना मन से फूट पड़ता है। अक्सर देखा है कि अपने अकेलेपन को शब्द जो साहचर्य देते हैं वह असीम शांति देता है मन को।

बूँदें जो आँखों से टपकती हैं वह खारी होती हैं, मगर कभी-कभी हर्षातिरेक में टपकी ढलकी ये बूँदें जब शब्दों का रूप लेती हैं तो लगता है मानो हीरक कण ही शब्द रूप में कागज़ पर जगमगा रहे हों। बहिन बिमला रावर जी की इन प्रस्तुत कविताओं में जीवन की दशों-दिशाओं का और मनोभावों का सरल और ग्राह्य शब्दांकन आप तक पहुँच रहा है। उनकी कविताओं में मात्र शब्द संयोजन भर नहीं है वरन जीवन के सफ़र में साधे संजोये बीज मंत्र हैं। जिनको पढ़कर और आत्मसात कर पाठक सहजता से समय चक्र के दृष्टिपटल पर उन चित्रों को देख पाता है। उनके काव्य सफ़र की तरह ही जीवन का सफ़र भी रहा है जो उपलब्धियों भरा है। प्रस्तुत काव्य संग्रह “भटके मेरा मन बंजारा” जीवन के दौरान चुने हुए विचार और अनुभव के मोती ही हैं।

कवयित्री बिमला रावर एक माँ और एक अध्यापिका का जीवन जीते हुए कविताओं के छौने पालकर हम तक पहुंचाने में सफल रही हैं। यह उनका चौथा काव्य-संग्रह है। जिस प्रकार उन्होंने इस पुस्तक के शीर्षक “भटके मेरा बन बंजारा” को जीवित शब्द-सफ़र का साथी बनाया है वह सार्थक हुआ है, क्योंकि पाठक को लगेगा “अरे! यह तो मेरे ही मन की बात है।” मन के कल्पित स्वप्न शब्द रूप में साकार हो उठे हैं।

अपनी कविता बिखरे मोती में मानो वे स्वयं के विषय में उपरोक्त कथन को ही पुष्ट करती हैं :-

“आज मेरे मोती पूरी कुंठाओं के साथ
जीवन के कई तीखे तीते अनुभवों के साथ
पीड़ा और कड़वाहट को साथ लेकर

आड़ी-तिरछी रेखाओं के रूप में

कागज़ पर बिखरते हैं

मेरी पीड़ा उन्हें थपकियाँ देकर बहलाती है

किन्तु -

पल-पल एक वक्र रूप लेकर

मेरी मोती माला कागज़ पर बिखर जाती है।"

मगर वह साथ ही आशा के दीप भी अपनी कविताओं से जगाती हैं :-

"छोटी सी आशा

रोज़ आएगी मेरे आँगन की दीवारों पर

धूप की सफ़ेद चादर

रोज़ भरती रहेगी मेरे जीवन में आशा

हाँ, मेरी ज़िंदगी में रोज़ सुबह लाएगी

धूप की सफ़ेद चादर"

उनकी कविताओं में जीवन की "बिछड़ी बूँद" भी है, प्रकृति से "एकाकार" हो जाने की अभिलाषा भी है, "नये राजा" और प्रजा का चिंतन भी है। वे स्वयं कहती है "उठा लो लेखनी" ताकि "सारी ब्रीड़ा और पीड़ा से मुक्त हो जाओ।" वे जीवन को जीने की आशा देते हुए कहती हैं :-

"हजारों स्वप्न खड़े हैं सामने बाँहें फैलाए हुए"

वे एक भारतभूमि से प्रेम रखने वाले हृदय की मालिक हैं और एक रचना में कहती हैं कि :-

"अपना देश, अपना शहर और अपना घर

अपनों का प्यार बहुत याद आता है"

उनकी कलम "ज़िंदगी तेरे खेल", "दिल की आवाज़", "भावनाओं की उलझन", "स्मृतियाँ", "ज़िंदगी के मौसम", "रिश्तों की सुबह", "देना पावना", "अन्तर की अग्नि", "तकदीर और तदवीर", का सफ़र तय करते हुए "आत्माराम" तक से संवाद करती हैं।

बहिन बिमला रावर जी का मुझ पर स्नेह और विश्वास ही है कि पुनः उन्होंने

इन रचनाओं पर मुझे अपनी बात आप तक पहुंचाने का सौभाग्य दिया है। मैं उनके इस प्रयास की सराहना करता हूँ और प्रभु से कामना करता हूँ कि वे कविताओं के माध्यम से अर्जित अनुभव और निष्कर्ष अपने पाठकों तक निरंतर पहुंचाती रहे। कोई भी पाठक इस बात को बखूबी महसूस कर सकता है कि गंभीर कविता अकेलेपन की उड़ान से तारे तोड़ लाने का काम है। कवि की वही कविता पाठक को मधुर काव्यरस का आस्वादन कराती है जिसमें पाठक उसमें निहित गहराइयों और ऊँचाइयों को नाप सके; और बिमला रावर जी की कविताएं ऐसी हैं जो गम्भीर होने पर भी पाठकों को काव्य रस का आनन्दमय रसास्वादन कराने की क्षमता रखती हैं। आशा है कि वे इसी प्रकार की मिठास अपनी कविताओं के माध्यम से अपने पाठकों तक निरंतर पहुँचाती रहेंगी।

केदार नाथ 'शब्द-मसीहा'
कवि एवं लेखक
दूरभाष : 09810989904
ईमेल-kedarnath151967@gmail.com

प्रकाशकीय

सर्वप्रथम श्रीमती बिमला रावर जी को उनके नवीनतम काव्य संग्रह 'भटके मेरा मन बंजारा' के लिए बधाई देता हूँ तथा उनका यह काव्य संग्रह पाठकों के मन को भाए, ऐसी शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

श्रीमती बिमला जी ने पुस्तक शीर्षक से ही अपनी बात कह दी – यह कवि मन है जो इस प्रकार भटकता कभी अम्बर को छूती पर्वत रेखाओं पर जा बैठता है और मानव मन के भीतर चल रहे ज्वार भाटों की सुध-बुध लेने लग जाता है। एक कवि हृदय एवं साहित्य साधक के मन से निकली बात जब पाठक के हृदय को छू जाती है तब कविता-सफल हो जाती है। पाठक को ऐसा लगता है मानो उसके ही मन की व्यथा-कथा का चित्रण हुआ हो।

'भटके मेरा मन बंजारा' काव्य संग्रह में बिमला रावर जी ने ऐसा ही सफल प्रयास किया है। आपके अवलोकनार्थ कुछ अंश अंकित है। एक ओर कवयित्री श्रीमती बिमला रावर जी का मन कल्पनाओं की उड़ान यूँ व्यक्त करता है –

"कल्पना की उड़ान ही / कवि की आसक्ति है।
कल्पना की मूर्ति ही / कवि की भक्ति है / वृत्ति, कृति है"

कुदरत की थाह लेते कवयित्री कुछ इस प्रकार कहती है –

कैसे प्रकाश देते / ये सूर्य चाँद तारे /
है कौन इनका स्वामी / हैं किसके वश में सारे /
कोई न दे सका है / इस गूढ़ प्रश्न का उत्तर
कुदरत ने कर दिया है / सब सृष्टि को अनुत्तर

सच्चे सेवक की भाँति बिमला जी ने देशवासियों की उलझन पर भी चिंता व्यक्त की है–

अलग-अलग दलों ने बड़ी धूम मचाई है /
अन्दर से सब चोर-चोर मौसेरे भाई हैं
सभ्यता-संस्कृति के टुकड़े-टुकड़े हो गये
विमल निर्मल स्वच्छ दिल जाने कहाँ खो गए

झगड़े हैं परन्तु उसका निवारण अपनी कविता में बिमला जी ने अपनी कविता – 'पाँच तत्त्व का वास सभी में' में सहजतापूर्वक प्रस्तुत कर दिया –

झगड़ों के कारण अनेक हैं / किन्तु उत्तर सिर्फ एक है /
पाँच तत्त्व का वास सभी में / सबके अन्दर खून एक है।

मनमोहन शर्मा 'शरण'
प्रकाशक, सम्पादक

आत्मकथन

मैं अपना नवीन काव्य संग्रह "भटके मेरा मन बंजारा" उन सहृदय एवं सुधि पाठकों को समर्पित कर रही हूँ जिनके हृदय तक मेरे हृदय से निकली मेरी कविता के भाव पहुँच सकें। मेरी कविता पढ़ने से यदि आपके सम्मुख कविता में निहित भाव का प्रतिबिम्ब उभर कर आकार ले लेगा, वास्तव में तभी मेरा प्रयास सफल होगा। प्रत्येक कविता में मेरा प्रयत्न यही रहा है कि उसमें निहित उद्देश्य और सन्देश को पाठकगण सरलता एवं प्रेम से समझ लें और यदि आपको अच्छे लगेंगे तो मेरा लिखना भी सफल होगा।

भारतीय काव्यशास्त्र में "काव्य" शब्द व्यापक अर्थ में सृजनात्मक साहित्य का वाचक है जिसमें गद्य और पद्य दोनों का आनन्द आता है। रूप आकाररहित शब्द गन्ध अपने अप्रत्यक्ष रूप में भी साकार रूप धारण कर हृदय और मस्तिष्क के मार्ग से निकल कर मानव के पूर्ण अस्तित्व को सुवासित करती है। साहित्य की प्रत्येक विधा उसकी मधुर शब्द गन्ध मानव के कृत्यों, व्यक्तित्व एवं सोच को प्रभावित कर एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से जोड़ देती है। यह शब्दगन्ध ठहरा पानी नहीं अपितु निर्झर होती है। इस छोटे से शरीर में न जाने कितनी नदियाँ, कितने अथाह सागर, पर्वत, अम्बर, जंगल, दलदल, रेगिस्तान, बवण्डर, दावानल, बड़वानल और भयंकर तूफान छिपे होते हैं। फिर भी मानव सारे काम करता है। हँसता है, रोता है, संघर्ष करता है। ऐसे में एक कवि हृदय के ज्वार भाटे पर अंकुश लगाने के लिये हृदय का सारा दर्द, सारे दृश्य-अदृश्य अश्रु, सुख-दुख अंगुलियों की पोरों तक ले आता है और कागज़ की विशाल उदार छाती पर बिखेर देता है अपनी लेखनी द्वारा। कवि का दर्द केवल उसका अपना नहीं होता उसमें घर, परिवार, मित्र, समाज, सड़क पर चलने वाला व्यक्ति, किसी भी स्थान पर घटने वाले हादसे सब शामिल होते हैं। उसे "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना से सबके सुख-दुःख की अनुभूति होती है।

बचपन से ही प्रकृति के साथ मेरा सम्बन्ध बहुत गहरा रहा है। भ्रमण-ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक स्थलों का। कोई भी व्यक्ति वन-उपवन, घाटियों, वादियों, नदियों-सागरों, रेगिस्तानों, सफेद चादर ओढ़े पर्वतों और मूक तपस्वी से खड़े वृक्षों के साथ एकाकार हो उठता है। उन्हें हृदय में आत्मसात कर लेना चाहता है। हज़ारों स्वप्न उभर आते हैं जो उससे कहते हैं आओ हमारी बाँहों में और चलो दूर बहुत दूर क्षितिज के उस पार। आकाश के गरजते बरसते बादल जो न जाने किस प्रियतमा को ढूँढते फिरते हैं, ढेरों अश्रु बहा कर लौट जाते हैं। रिश्तों की उलझनें, अपनों के मारे फूलों

से घायल लोग, समाज में होते अत्याचार, अनाचार, बलात्कार, हत्या, विश्वासघात, अपहरण, मुखौटे चढ़ाये इन्सान, राजनैतिक उथल-पुथल, कूटनीतियाँ, आर्थिक विसंगतियाँ हर तरह के भ्रष्टाचार। लाचार होकर कुण्ठा और आक्रोश से भरा कवि अपने आँगन में फैली धूप और दीवारों से खिसकती धूप की चादर से प्रेरणा लेता है कि अब अँधेरी रात की उदासियों के बाद आशा जगाती धूप की चादर कल फिर मेरी ज़िन्दगी में नई सुबह लायेगी और वह सूरज की नई किरण की प्रतीक्षा करता है। वह सागर की लहरों को पार करती नन्हीं नौका से भी प्रेरणा लेता है। वह माँ को भी नहीं भूलता –

"माँ जैसा दुनिया में कोई और नहीं होता है।
बच्चे को तिनका भी चुभे तो माँ का दिल रोता है।
है कितनी स्वर्गीय शान्ति छाया माँ की ममता की।
सब बच्चों के लिये एक ही दृष्टि होती समता की।

कभी वह एकांत में बैठ कर अपने स्वत्व को अपने व्यक्तित्व को खोजता है तो कभी अपने मौन का कारण स्वयं से पूछता है। प्रत्येक मानव के जीवन में मोती बिखरते रहते हैं। बचपन में निश्छल, निष्कण्ट, स्फटिक से पारदर्शी अन्तर से निकले मोती, फिर वही मोती बढ़ती आयु और हालातों से बदल जाते हैं! –

कागज पर मोती अब भी बिखरते हैं।
कभी भावनाओं के मोती कभी कामनाओं के मोती।
कभी अन्तर के मोती कभी आँखों के मोती

यदि मेरी कविताओं में मेरे सुधि सुहृदय पाठकगण को अपने जीवन से एक भाव, एक भी दृश्य दृष्टिगत होता तो मेरा लेखन धन्य हो जायेगा मैं आपकी प्रतिक्रिया अवश्य जानना चाहूँगी। प्रतीक्षा करूँगी। आपकी प्रतिक्रिया एवं समीक्षा आदि से ही मुझे आगे लिखने का प्रोत्साहन मिलेगा एवं प्रेरणा प्राप्त होगी। इसके लिये मैं आपकी सदैव आभारी रहूँगी।

मैं अपने स्वर्गीय पिता श्री सरजू दयाल अस्थाना एवं माँ श्रीमती जनक दुलारी अस्थाना के दिये हुए ज्ञान एवं संस्कारों द्वारा तथा अपने स्वर्गीय पति श्री सत्य प्रकाश रावर के सहयोग एवं प्रेरक प्रोत्साहन द्वारा ही लेखन से जुड़ी रही और आगे कदम बढ़ा सकी।

मैं अपने भाई, मित्र एवं मार्गदर्शक कविवर केदार नाथ 'शब्द-मसीहा' की हृदय से आभारी हूँ जिनका साथ मुझे सदैव एक सुखद प्रेरणा देता है। जिनके प्रयत्न एवं परिश्रम से ही मेरे दो काव्य संग्रह "फुलवारी बाल गीतों की" और "कल्पनाओं के

काफिले" प्रकाश में आ सके। सखी सुनीति कवांत्रा को हृदय से धन्यवाद देती हूँ। वे एक नामचीन कवयित्री हैं जिनकी सहृदयता मुझे सदैव सुखद अहसास, साहस एवं प्रेरणा देती है।

मैं विशेषतः अपने प्रकाशक श्री मनमोहन शर्मा 'शरण' की दिल से आभारी हूँ जिनके कारण मेरा यह काव्य संग्रह आपके करकमलों तक पहुँच रहा है।

बिमला रावर सक्सेना

बी-45, न्यू कृष्णा पार्क,
नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली-110018
दूरभाष : 011-25533221

अनुक्रम

1.	ऐसी कृपा करे दे प्रभु	13
2.	भटके मेरा मन बंजारा	14
3.	बिखरे मोती	16
4.	धूप की चादर	17
5.	बिछड़ी बूँद	19
6.	एकाकार	20
7.	नये राजा	22
8.	सूरज की पहली किरण	24
9.	इक्कीसवीं मंज़िल	25
10.	ये नग़मे	26
11.	माँ जैसा	27
12.	उठा लो लेखनी	28
13.	स्वप्नों की बाँहें	29
14.	नन्ही नौका की प्रेरणा	30
15.	कुछ गीत बेचने हैं	31
16.	पत्थर और नोट	33
17.	दोहे	34
18.	मुझे याद आता है	35
19.	एक सी छुअन	37
20.	ज़िदगी तेरे खेल	38
21.	दिल की आवाज़	39
22.	भावनाओं की उलझन	40
23.	मैंने इस शहर में	41
24.	कभी सोचा न था	42
25.	दुर्वह	43
26.	नेताजी लिखना चाहते हैं	44
27.	स्मृतियाँ	46
28.	कहाँ जाते हो बदरा	47
29.	बाहर आ जाओ	48
30.	देश की किस्मत	49
31.	ज़िंदगी के मौसम	50
32.	रिश्तों की सुबह	51
33.	आस और आग	53
34.	क्यों ये यादें आकर	54
35.	ठहर गईं आँखें	55
36.	हर युग में	56
37.	स्वार्थ और अर्थ	58
38.	केवल एक छाया	60
39.	उलझे बाल	62
40.	टुकड़ा-टुकड़ा ज़िंदगी	63
41.	बुलंदी	64
42.	मैं कबीर बन जाऊँ	65
43.	आत्मा राम	66
44.	रिमोट	67
45.	देना पावना	68
46.	निर्मोही का प्यार	69
47.	कुछ दर्द	70
48.	शायद	71
49.	कल्पनाओं की उड़ान	72
50.	कुदरत	73
51.	जीवन के नाते	75
52.	वादा करता हूँ	76

53. शब्द गन्ध 77
54. दिल की गहराई 78
55. न कुछ कहना 79
56. लोग यूँ समझा किये 80
57. न छत है न आँगन 81
58 कितने सपने 83
59. नई रचना 84
60. उलझा हर हिन्दुस्तानी 85
61. कौन देगा न्याय 86
62. सुहानी मंज़िल 87
63. खुशी बाँट दो 88
64. उम्मीदों के चिराग 89
65. जनता की याददाश्त 90
66. लाचार 91
67. कुण्ठा 92
68. तकदीर और तदबीर 93
69. वक्त 94
70. विश्वास 95
71. आकाक्षाओं की उड़ान 96
72. तुम 97
73. अन्तर की अग्नि 98
74. आने जाने का नाता 99
75. तैरती परछाइयाँ 101
76. कैसा जादू 103
77. यादों के दीप 104
78. दिग्भ्रान्त 105
79. याचिका 106
80. कैसा दिखावा 107
81. चोर और पुलिस 109
82. अग्निशिक्षा 110
83. एक प्रश्न 111
84. ऐसा एकांत 112
85. आ जा चंदा सुख दुख बाँटें 113
86. रात और दिन का सफर 114
87. रात की उदासियाँ 115
88. मुखौटे और इन्सान 116
89. टूटता विश्वास 117
90. भीड़ सिर्फ भीड़ होती है 118
91. जीवन चक्र 119
92. क्यों मैं अखबार पढ़ती हूँ 120
93. अर्थ भूल गए 122
94. फूटते छाले 123
95. पाँच तत्व का वास सभी में 124
96. सरकारी कर्मचारी की लाचारी 125
97. निभाना पड़ेगा 126
98. जो समाज को रौशनी दिखाये 127
99. बहारों को हम बुलायेंगे 128

ऐसी कृपा कर दे प्रभु

तू ही दाता है मेरा तू ही मेरा है स्वामी
तेरे चरणों में रहूँ ऐसी कृपा कर दे प्रभु
मेरी दुनिया के उजाले हैं तेरे ही दम से
कभी होना न ख़फा मेरे प्रभु तुम हमसे
तुमसे रौशन है मेरा घर, मेरी किस्मत स्वामी
तेरे चरणों में रहूँ ऐसी कृपा कर दे प्रभु

दिन हो या रात हो बस एक सहारा तेरा
डूबती नाव को बस एक किनारा तेरा
भूले न नाम तेरा टूटे कभी लौ न तेरी
तेरे चरणों में रहूँ ऐसी कृपा कर दे प्रभु

मेरी शक्ति मेरी भक्ति मेरी मुक्ति तू ही
मेरा परलोक मेरा लोक है सद्‌गति तू ही
शुद्ध हों कर्म मेरे शुद्ध हो जीवन मेरा
तेरे चरणों में रहूँ ऐसी कृपा कर दे प्रभु

भटके मेरा मन बंजारा

भटके मेरा मन बंजारा।
उड़े कभी यह नील गगन में,
ठहर जरा ऊँचे पेड़ों पर,
पहुँच जाए क्षण भर में उड़कर,
दूर कहीं गहरे सागर में,
लहरों पर कर नृत्य झूमकर,
चूमे उस असीम की धारा।
भटके मेरा मन बंजारा।

कभी यकायक चढ़ जाए ऊँचे पहाड़ पर,
और बना छोटी सी कुटिया,
रम जाता है उसके भीतर,
ओढ़ बर्फ की चादर को,
सो जाता बिसराता जग सारा,
भटके मेरा मन बंजारा।

दूर कहीं जंगल में जाकर
घन कानन की गहन गुफा में
मन जाकर है छुप जाता
मन मयूर नाच-नाचकर
न जाने कितने गाने है गाता
टूटा ख्वाब बिखर जाता सब
आ जाता सच की धरती पर
कड़वा सच सम्मुख आ जाता
यह जीवन तो है इक कारा
भटके मेरा मन बंजारा।

कभी पहुँच जाता है विस्तृत मैदानों में
और हिरण सा कूद-कूद कर

जाता वहाँ जहाँ क्षितिज में
मिलती धरती निज प्रियतम से
मेरा मन ही मेरा मंदिर
मेरी मस्जिद गुरु का द्वारा
मेरा मन बंजारा।
मेरा मन बन गया इकतारा
भटके मेरा मन बंजारा।

बिखरे मोती

जब मैं छोटी थी
लिखना शुरू किया
माँ ने कहा — बिटिया सुन्दर अक्षर लिखना
विद्यालय में, घर में, हर जगह
जो देखता वह कहता — वाह! लिखाई क्या है
जैसे कागज़ पर मोती बिखरे हैं
फिर मैं बड़ी होती गई
जीवन की सच्चाइयों से परिचित होती गई
कागज़ पर मोती अब भी बिखरते हैं
कभी भावनाओं के मोती
कभी कामनाओं के मोती
कभी अन्तर के मोती
कभी आँखों के मोती
पर मेरे बचपन के वो मोती कहाँ खो गये
जो मेरे निश्छल, निष्कपट
पारदर्शी अन्तर से निकल कर
कोरे कागज़ पर बिखरते थे
जिन्हें मेरी अंगुलियों की
पोर-पोर सहलाती थी
आज मेरे मोती पूरी कुण्ठाओं के साथ
जीवन के कई तीखे तीते अनुभवों के साथ
पीड़ा और कड़वाहट को साथ लेकर
आड़ी तिरछी रेखाओं के रूप में
कागज़ पर बिखरते हैं
मेरी पीड़ा उन्हें थपकियाँ देकर बहलाती है
किन्तु - पल-पल एक वक्र रूप लेकर
मेरी मोती माला कागज़ पर बिखर जाती है।

धूप की चादर

जब मेरे आँगन की दीवारों से
खिसकने लगती है
थरथराती हुई धूप की चादर
थिरकने लगती है काली परछाइयाँ
अन्दर और बाहर
अपनी चमचमाती चादर को समेट कर
सूरज छुप जाता है
काली चादर के साये तले
चुपके से दबे पाँव
अँधेरा घुप आता है
मेरे कमरे की खामोशियाँ
कुछ और खामोश हो जाती हैं
मेरे दिल की उदासियाँ
कुछ और उदास हो जाती हैं
आँखों का शून्य
कुछ और बढ़ जाता है
दिल और दिमाग पर
अँधेरे का खुमार चढ़ जाता है
ऐसे में सहारा देती है
एक छोटी सी आशा
कल फिर
मेरे आँगन में आयेगी
सूरज की सुनहरी किरण
फिर सुबह होगी
जगमगायेगा मेरा घर आँगन
कुछ नया होगा
दूर होगी निराशा
धूप सी जगती है

छोटी सी आशा
रोज आयेगी मेरे आँगन की दीवारों पर
धूप की सफेद चादर
रोज़ भरती रहेगी मेरे जीवन में आशा
हाँ मेरी ज़िंदगी में रोज सुबह लायेगी
धूप की सफेद चादर।

बिछड़ी बूँद

मेरे सामने बिखरी
इस अथाह जलराशि की एक-एक लहर
एक-एक तरंग
और उसमें घुला एक-एक जलकण
मुझे आकर्षित करता है
लगता है इनका मेरा जनम-जनम का नाता है
शायद मैं वही बूँद हूँ
जो बादलों की गोद में चढ़ कर
विश्व भ्रमण को निकली थी
और अपनी जड़ों से ऐसी बिछड़ी
कि कभी लौट कर न आ सकी
घूमती-घूमती
न जाने किस-किस सीपी की गोद में विचरती
आज एक बार फिर
अपने सृजनकर्त्ता के सम्मुख आ पहुँची हूँ
और अपने रीते हृदय में
इस बिछड़े साथी को
इसकी अथाह जलराशि सहित
भर लेना चाहती हूँ
या
इन बाहें फैला-फैला कर आती
विशाल लहरों के अंक में
समा जाना चाहती हूँ।

एकाकार

जी चाहता है
दूर तक फैली इन वादियों में
घूम-घूमकर कहीं खो जाऊँ
इन ऊँचे नीचे पहाड़ों में
झाड़ और झंखाड़ों में
उपवन और कानन में
प्रकृति के प्रांगण में
झूम-झूम कर गाऊँ
रंग-बिरंगे फूलों के
हार पिरो लाऊँ
जी चाहता है
पेड़ों के बीच से गुज़रती
हवा की सरसराहट
नदिया के पानी की कलकलाहट
भौरों की गुनगुनाहट
पक्षियों की चहचहाहट
फूलों की थरथराहट
सबको समेट कर हृदय में बसा लूँ
जी चाहता है
इन खामोश घाटियों में फैले
नीरव संगीत से
मनवीणा को झँकृत कर लूँ
शीतल सुगन्धित मलयानिल से
हृदय को सुरभित कर लूँ
निर्मल आकाश के चाँद तारों से
अन्तर को ज्योतित कर लूँ
निरभ्र-गगन के प्रचण्ड दिवाकर से
अपना भाग्य गगन प्रकाशित कर लूँ

जी चाहता है
मैं प्रकृति की सम्पूर्ण
रमणीयता, कमनीयता,
पवित्रता, गम्भीरता
ख़ामोशी और जीवन्तता
सबको अपने हृदय में समाहित कर लूँ
प्रकृति से एकाकार हो जाऊँ
और
वादियों में बिछे हरे कालीन पर
विश्राम करूँ और सो जाऊँ

नये राजा

बरस पर बरस बीत गए
जिंदगी के दाँव पर
हम कुछ हार गए
कुछ जीत गये
एक देश के इतिहास में
साठ सत्तर बरस
कोई लम्बा समय नहीं है
हमने सब कुछ पा लिया
या सब कुछ खो दिया
ऐसा भी कोई निर्णय नहीं है
सैकड़ों बरसों की गुलामी
और शोषण के बाद
लाखों देशभक्तों के
बलिदानों के बाद
देश स्वतंत्र हो गया
देश गणतंत्र हो गया
धर्मनिरपेक्ष राज्य में
रामराज्य की कल्पना,
क्या सचमुच पूरा हुआ
बापू का यह सपना
यह कैसा गणतंत्र है
जिसमें जनता स्वयं
अपना राजा चुनती है
जनता स्वयं अपने लिये
एक जाल बुनती है
फिर इस जाल में फँस कर
वहीं खड़ी रह जाती है
राजा की पतंग

ऊँची से ऊँची उड़ी जाती है
पतंग की डोर
कभी इस हाथ, कभी उस हाथ जाती है
जनता वहीं खड़ी, हाथ मल-मल पछताती है
पूछती है एक प्रश्न
यह कैसी स्वर्ण जयन्ती है
यहाँ स्वर्ण क्या है
खाने को रोटी और रहने को मकान भी नहीं
हमारे बनाये राजाओं की दृष्टि में
हमारा कोई सम्मान नहीं
जिन्हें हमने चुना, वे तो वी.आई.पी. हो गए
पुलिस की सुरक्षा में, हमसे कितनी दूर हो गए
राजा बन कर, वे तो मुँह मोड़ गए
बेचारी जनता को, चौराहे पर छोड़ गए।

सूरज की पहली किरण

लम्बी काली रात के भयावह अँधेरे
उमड़ते तूफान बादल घनेरे
बरसों से संजोये सपनों की टूटन
जिंदगी में बटोरे काँटों की चुभन
अधसोई सी अधमोई सी
कभी सागर की लहरों में डूबती उतराती हूँ
कभी बीच भँवर में गोते खाती हूँ
कभी आसमान से धरती पर गिरती हूँ
कभी बावरी सी कुछ ढूँढती फिरती हूँ
कभी कोई व्यंग से हँसता है
कभी कोई सर्प सा डसता है
शायद कुछ लोग बंदूकें लेकर
मेरे पीछे भाग रहे हैं
हाँफते काँपते लड़खड़ाते
मेरे पैर भी भाग रहे हैं
अचानक मैं भरभराकर गिर जाती हूँ
एक झटके से आँख खुल जाती है
पास की खिड़की से सूरज की पहली किरण
मेरे कमरे में झाँक रही है
भयंकर सपनों से निकल कर
मैं आँखों के रास्ते दिल में भर लेती हूँ
उस नन्हीं किरण की उजास
अन्तर में एक नया विश्वास
एक नई सुबह की आस
लेकर आई सूरज की पहली किरण।

इक्कीसवीं मंज़िल

मुंबई में एक फ्लेट की
इक्कीसवीं मंज़िल की एक खिड़की
मूर्तिवत् खड़ी
मैं निहार रही हूँ
एक अनुपम दृश्य को
सामने बिखरा असीम नीला अरब सागर
ऊपर नीले चँदोवे सा नीला आसमान
सूरज देवता सामने खड़े थे
अचानक क्या हुआ
किसी प्रेयसी की स्मृति में
लज्जा से लाल गुलाबी नारंगी हो गए
या किसी शत्रु को पाकर
क्रोध में लाल आग का गोला बन गए
साथ में सुरमई नीले पीले
सुनहरे, रूपहले सतरंगे बादल
घेरा लगाये अपने देवता की छाँव तले
धरती आकाश को रंग रहे हैं
मेरे सामने जल थल आकाश
पेड़-पौधे सब रंगों में सराबोर हैं
मैं अपलक अवाक् सारे दृश्य को
साँस रोक कर निहार रही हूँ
कहीं पलक की झपक में
यह दृश्य अदृश्य न हो जाये
किन्तु निमिष मात्र में
सूर्यदेव सागर में कूद कर अदृश्य हो गए
और मेरे हृदय में
न जाने कितने अनुत्तरित प्रश्न छोड़ गए।
कैसा अनोखा दृश्य देखा मुम्बई की इक्कीसवीं मंज़िल से।

ये नग़मे

ये दिल की आवाज़ में डूबे हुए नग़मे
ये दर्द में घुल-घुल के निकलते हुए नग़मे
ये शायर की आँखों से बहते हुए नग़मे
बेवफाई से मिले दर्द को सहते हुए नग़मे
ये अश्क बन कर काँच से पिघलते हुए नग़मे
ये आह बन कर आँख से निकलते हुए नग़मे
ये दिल से खून की तरह टपकते हुए नग़मे
तेरी यादों की हिना से महकते हुए नग़मे
ये दर्द की बाँहों में लिपटते हुए नग़मे
ये अपने रंजो ग़म में सिमटते हुए नग़मे
ये ग़म के अँधेरों में खोए हुए नग़मे
ये ख़ामोश लबों पर सोए हुए नग़मे
ये प्यार के रस में डूबे हुए नग़मे
ये दिल की आवाज़ में डूबे हुए नग़मे
कभी किरच-किरच बिखरते हुए नग़मे
कभी प्यार की खुशबू से निखरते हुए नग़मे
कभी चहकते हुए कभी ऊबे हुए नग़मे
ये दिल की आवाज़ में डूबे हुए नग़मे ।

माँ जैसा

माँ जैसा दुनिया में कोई और नहीं होता है
बच्चे के तिनका भी लगे तो माँ का दिल रोता है
जीवन की हर इक मुश्किल से माँ बच्चों को बचाती
सर्द और गर्म हवाओं में आँचल के तले छुपाती

बचपन से लेकर जीवन भर अच्छी सीख सिखाती
बच्चा अगर भटक जाये तो उसको सुपथ दिखाती
बच्चे को कोई सताये तो वह रणचण्डी बन जाती
बच्चा गलती अगर करे तो उसको सबक सिखाती

बच्चे की पहली गुरु उसकी माता ही होती है
हर बुराई को दूर हटा कर संस्कार बोती है
बड़े प्यार से उसे सुलाती लोरी उसे सुनाती
उसकी एक हँसी के ऊपर वारी-वारी जाती

है कितनी स्वर्गीय शान्ति छाया माँ की ममता की
सब बच्चों के लिये एक ही दृष्टि होती समता की
बच्चों के सुख-दुख का साथी माँ का दिल होता है
माँ जैसा दुनिया में कोई और नहीं होता है।

उठा लो लेखनी

माँस मज्जा से ढके इस शरीर के अन्दर
कितनी नदियाँ कितने सागर
कितने पर्वत कितने अम्बर
कितने जंगल कितने दलदल
और कितने रेगिस्तान छिपे हैं
बवण्डर दावानल
तूफान बड़वानल
सबमें डूबता उतराता
जलता जलाता
हँसता हँसता मानव
कैसे यह सब सहे
कैसे इन सबके साथ रहे
ऐसे में जब भी हृदय सागर में
ज्वार भाटे उठें
उमड़ पड़ें कुछ भाव
तो बना दो विचारों के
उस ज्वार पर बाँध
उठा लो लेखनी मोड़ दो बहाव
बहा दो कागज़ की छाती पर
अपने हृदय के सारे सागर
सूखे गीले दृश्य अदृश्य सारे अश्रु
बिखेर दो उसकी उदार विशाल छाती पर
और कुछ क्षण के लिये ही सही
सारी ब्रीड़ा और पीड़ा से मुक्त हो जाओ।

स्वप्नों की बाँहें

हज़ारों स्वप्न खड़े हैं सामने
बाँहें फैलाये तुम
आओ हमारी बाँहों में आकर
उड़ चलो दूर, बहुत दूर
देखो पर्वत, नदियाँ सागर और आकाश
सब तुम्हारे स्वागत के लिये
खड़े हैं सिर झुकाये हुए
आओ –
बादलों के झूले पर चढ़ कर
चले क्षितिज के उस पार
जहाँ ढेर सा स्वर्ण बिखरा पड़ा है
चलो अपने स्वप्नों को उससे सजा लो
चलो गगन की ऊँचाइयों पर
खड़े हैं चाँद तारे तुम्हारी राह में
आँखें बिछाये हुए
चलो सागर की गहराइयों में घूम आयें
चुरा लायें कुछ अनमोल रत्न
सागर की गोदी से
माँग लायें कुछ मोती
भोली सी सीपी से
क्यों खड़े हो यूँ
आँखें चुराये हुए
हज़ारों स्वप्न खड़े हैं सामने
बाँहें फैलाये हुए।

नन्ही नौका की प्रेरणा

दूर सागर की तरफ से
आ रही मादक पवन
मुझे अन्दर तक
अन्तर की पर्तों तक
सहला जाती है
दूर बहुत दूर से आती
लहरती लहरती
मचलती इठलाती लहर
अपने नर्तन से
मेरे जीवन के आघातों से
टूटे हृदय को
बहला जाती है
सागर के विशाल,
उफनते वक्ष को चीरती
नन्ही सी नौका
ऊँची-ऊँची लहरों का
सामना करती
कभी उनके ऊपर से
कभी उनके बीच से
अपनी राह बनाती
आगे बढ़ती जाती है
और मुझे जिन्दगी में आते
तूफानी संघर्षों से लड़ने की
प्रेरणा दे जाती है।

कुछ गीत बेचने हैं

बहुत सी चीजें खरीदते हैं आप
आज एक नई चीज़ लाई हूँ देखने के लिये
कुछ गीत लाई हूँ बेचने के लिये
पढ़ कर देखिये
हो सकता है आपको लगे
अरे! यह तो मेरी ही कहानी है
मेरे हर गीत में कुछ ऐसी ही रवानी है
मेरे पास हर रंग के गीत हैं
मेरे पास हर ढंग के गीत हैं
शिशु की निश्छल मुस्कान के गीत
स्नेह के आदान प्रदान के गीत
मीठी-मीठी लोरियाँ निंदिया की
बच्चे की अँखियों में चमकती
अम्मा की लाल-लाल बिंदिया की
प्यार भरी लाली के गीत
खेल खिलौनों के गीत
प्यारे मृग छौनों के गीत
खिलंदड़े बचपन के गीत
कुदरत के रंग के गीत
मानव की जंग के गीत
स्कूल के अविस्मरणीय क्षणों के गीत
कॉलेज के बन्धुओं सखियों की कहानियाँ
सपनों में मुस्कुराती मीठी निशानियाँ
घर गृहस्थी की उलझनों के गीत
बाल बच्चों के बचपन के गीत
बुढ़ापे की धूप छाँव के गीत
जीवन के आखिरी पड़ाव के गीत
सारे गीत एक ही भाव मिलेंगे

बाकी सारे भाव तो आपके अपने हैं
मुझे तो बस कुछ गीत बेचने हैं
आप पढ़-पढ़ कर देखिये
आप चुन-चुन कर खरीदिये
सब गीत आपको अपने से लगेंगे
अगर आप उन्हें प्यार से पढ़ेंगे
कोई पैसे नहीं लगते देखने के लिये
कुछ गीत लाई हूँ बेचने के लिये।

पत्थर और नोट

सड़क पर पत्थर कूटते
उसे रोज़ देखती हूँ
दुबली पतली काया की यह नारी
कवि की कनक छड़ी सी कामिनी
ऐसे मनोयोग से पत्थर तोड़ती है
जैसे नोट गिन रही हो
सर्दी गर्मी बरसात
हमेशा नन्हा बच्चा है साथ
उसे हर मौसम में पत्थर तोड़ना है
पत्थर तोड़ कर उसे अपना घर जोड़ना है
हर टूटता पत्थर उसे कहता है
तू हमसे भी मज़बूत है
हर शाम
वह टूटे पत्थरों को नोटों में बदल कर
अपने घर ले जाती है
उसके मुख पर होती है
एक संतोष भरी मुस्कान
नहीं
मैं इन पत्थरों की तरह
कभी टूट नहीं सकती
ये हाथों की टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें
मेरा स्वाभिमान
कभी लूट नहीं सकती।

दोहे

अपने मन कौ सब लखें, पर मन लखे न कोय
जो सब में निज मन लखे, जग में दुखी न होय।।1।।

सीख दई मन लाय के, खूब दिया उपदेश
अपनी बारी आई तो, कूच किया परदेश।।2।।

छोड़ दिया सब कुछ मगर, मैं न छोड़ा जाय
छूटे जिससे मैं उसे, सब दौलत मिल जाय।।3।।

भाई अपनी जिंदगी, तो जीते सब लोग
जो जीते सबके लिये, वही बड़े हैं लोग।।4।।

मैं और तू को छोड़ दे, तज दे मति का फेर
'हम' की वाणी बोल तो, प्रभु सुनेंगे टेर।।5।।

जग में मेला लग रहा, आते जाते लोग
सुख-दुःख कितना ले चले, ये करमों के भोग।।6।।

जीते जी के खेल सब मरै बाद कछु नायँ
भरे भंडारे छोड़ कर खाली हाथ सब जायँ।।7।।

क्या खोया क्या पा लिया ये न जाने कोय
जितना झोली में रहा वही आपना होय।।8।।

करे शिकायत क्यों मना जो बोया वो काट
खेती काँटो की करी कनक न आये हाथ।।9।।

बाँट सके तो बाँट दे मन में जितना प्यार
रक्षा तेरी करेंगे एक वही करतार।।10।।

मुझे याद आता है

जब भी मैं कहीं दूर जाती हूँ
मुझे याद आता है
मेरा शहर मेरा घर
मेरे घर की दीवारें और कोने
दरवाज़े खिड़कियाँ और छत
मेरे आँगन का बूढ़ा पेड़
सब आ जाते हैं मेरी आँखें भिगोने
हर एक हिस्सा याद दिलाता है
मेरे शहर के हर मौसम को
हर याद में घोल जाता है
मेरे जीवन के हर रंग को
आँगन और छत में बिखरी
सुनहरी चादर सी फैली
सर्दियों की नरम-नरम धूप
हड्डियों तक चीरती जाती
किटकिटाती ठंड
या कड़कती जलाती
दिल को अन्दर तक घबराती
गर्मियों की कड़कड़ाती धूप
बसंती बयार
बसंत की बहार
सावन के मौसम में बारिश की फुहार
या मूसलाधार
मेरे शहर की सड़कें और गलियाँ
मेरे शहर के लोग उनकी बतियाँ
दूर जाने पर
सब क्यों इतने याद आते हैं
क्यों मुझे सताते हैं

क्यों मुझे बुलाते हैं
क्यों मेरा दिल भाग कर
उनके पास चला जाता है
दूर जाने पर
मुझे मेरा घर मेरा शहर
बहुत याद आता है
मैं अपना दिल अपने घर में छोड़ जाती हूँ
फिर भी घर के कोने-कोने को याद करती हूँ
मैं कभी भुला नहीं सकती
अपना देश, अपना शहर और अपना घर
अपनों का प्यार बहुत याद आता है।

एक सी छुअन

कभी-कभी हमें ज़िंदगी में
अचानक कुछ ऐसे लोग मिल जाते हैं
जिनको देख कर लगता है
शायद उनके हमारे जनम-जनम के नाते हैं
दर्द की एक सी चुभन
अहसासों की एक सी छुअन
भावनाओं संवेदनाओं
अनुभूतियों में तादात्म्य
जिनसे मिलकर
जीवन में लगे तथ्य
विचारों और इच्छाओं में
कुछ लगे अपना सा
जिसके साथ जिया वक्त लगे
एक सुन्दर सपना सा
जिनकी आँखें
हमारे अन्दर झाँक लेती हैं
हमें जान लेती हैं
दिल को पहचान लेती हैं
दो दिल एकाएक नेह से मिल जाते हैं
ज़िंदगी में अचानक कुछ ऐसे लोग मिल जाते हैं
लगे जिनसे हमारे जनम जनम के नाते हैं।

ज़िंदगी तेरे खेल

कभी दिन में दिखाये तारे
कभी रातों में गिनवाये तारे
कभी सुख के बादल छम-छम बरसे
कभी घिरे दुख के बादल अँधियारे
ज़िंदगी तेरे खेल बड़े न्यारे।

सुख के दिन बीत गये लम्हों में
दुख के लम्हें भी लग रहे बरसों से
जो व्यंग बाण गैरों से भी न सोचे थे
वो पा लिये अपनों से
कैसे बदल जाते हैं भाग्य के सितारे
ज़िंदगी तेरे खेल बड़े न्यारे।

चाहतें, इच्छायें, अरमान भी हैं
अपनी मुसीबतों के सारे सामान भी हैं
सुख दुख की आवाज़ाही को ध्यान से देखा भी नहीं
कितना खोया कितना पाया इसका लेखा भी नहीं
सुख दुख अनुभूति अहसास कुछ तो सोचा भी नहीं
हमने तो ज़िंदगी के दिन ज़िंदगी पर वारे
ज़िंदगी तेरे खेल बड़े न्यारे।

दिल की आवाज़

उस रात कुछ आवाज़ें सुनाई दी
वो खून से लिपटी आवाज़ें
दूर से पहचानी जा रहीं थीं
लेकिन कोई उन आवाज़ों की दिशा में
जाने का साहस नहीं कर पा रहा था
सब भयभीत थे और जानते थे
आज फिर
कुछ दिन पहले वाली कहानी
दुहराई जा रही है
आतंक का यह ताण्डव
सब की आँखों के आगे चल रहा था
किसी का घर किसी का दिल जल रहा था
कौन हैं ये आतंकवादी
इनके क्या लक्ष्य हैं
क्या उसूल हैं
कोई नहीं जानता
शायद ये खुद भी नहीं जानते
शायद उन्हें भी कभी
अपने दिल की आवाज़ नहीं सुनाई दी
अगर सुनाई देती
तो शायद उन्हें अपने दिल से बहने वाले
अपने शरीर के खून
और ज़मीन पर बहने वाले
इन निर्दोष अपरिचितों के खून में
कोई अन्तर नज़र न आता।

भावनाओं की उलझन

हैरान हूँ
परेशान हूँ
पशेमान हूँ
मैं कहाँ गलत हूँ
कहाँ सही हूँ
वो भी वही हैं
मैं भी वही हूँ
एक दिन मेरे ये परिचित जब मिले
उनकी आँखों का
अपरिचय का भाव पढ़ कर मन डर गया
मैं उन्हें पहचानने में कोई भूल तो नहीं कर गया
एक दिन अचानक से मेरे दरवाज़े पर दस्तक हुई
वही सज्जन घर आकर ऐसे मिले
जैसे बरसों से बिछड़े मित्र मिलें
उनके बच्चे को मेरे विद्यालय में
दाखिला चाहिये था
भला मुझसे बढ़ कर उनका परिचित
विद्यालय में और कौन था
मेरा मन मुझसे पूछ रहा था
मेरी गलती कहाँ हुई
उनके मुखौटों को समझने में
या अपनी भावनाओं में उलझने में।

मैंने इस शहर में

मैंने इस शहर में बहुत कुछ देखा है
घर के अन्दर के रिश्तों को
किरच-किरच बिखरते देखा है
माता-पिता की तकरारों के बीच
मासूम बच्चों को
पिसते सिहरते देखा है
वर्षों से जोड़े गये स्थापित स्थाई रिश्तों को
तिनका-तिनका जोड़ कर बनाये गये घर को
टूटते छूटते देखा है
इस युग में घरों में कुछ नये शब्द आये हैं
मेरा अहं, मेरा अस्तित्व मेरी अपनी ज़िंदगी
शायद स्नेह, संवेदना, सहानुभूति
प्रेम, धैर्य, सहिष्णुता जैसे शब्द
पुराने शब्दकोष में ही अच्छे लगते थे
आज का युग तेज़ गति का है
सारे निर्णय शीघ्रता से होने चाहिये
अपने अहं को बचाने में देर नहीं होनी चाहिये
अहं की इस लड़ाई में मैंने, अहं के धक्के से
घर की दीवारों में आई दरारें देखी हैं
पल-पल ख़िज़ां में बदलती बहारें देखी हैं
नये युग के नये जीवन से निष्काषित
इन अमूल्य शब्दों के अभाव में मैंने
घर को मकान बनते देखा है
भरे बसे घर को वीरान होते देखा है
मैंने इस शहर में बहुत कुछ देखा है।

कभी सोचा न था

कभी सोचा न था –
कि जिंदगी में
कुछ ऐसे हालात भी आयेंगे
जब मेरे अपने आदर्श
मेरा ही उपहास उड़ायेंगे
कभी सोचा न था -
कुदरत के रंग
इतने बदरंग हो जायेंगे
कि प्रेम स्नेह हमदर्दी और आदर जैसे शब्द
झूठे स्वप्नों की तरह भंग हो जायेंगे
कभी सोचा न था –
भाई बन जायेगा भाई का दुश्मन
या हो जायेगा मित्रों का काला मन
प्यासे को पानी भूखे को भोजन
अन्धे लँगड़े को सहारा देगा न कोई
दो मीठे शब्दों को
तरसते रह जायेंगे बड़े बूढ़े
प्यार के दो बोल
बोलेगा न कोई
कभी सोचा न था –
रंगों की उमंग में सब
इतने अँधे हो जायेंगे
कि कुदरत के सारे रंग
इतने बदरंग हो जायेंगे।

दुर्वह

दूरियों का अहसास
दूरियों से भी अधिक भयावह होता है
कोई जब पास होते हुए भी दूर होता है
उस स्थिति को सहना
मृत्यु से भी अधिक असह्य होता है
जीवन चक्र चलता रहता है
जीवन संघर्ष भी चलता रहता है
ठीक वैसे ही
जैसे जब तक पृथ्वी रहती है
प्रजापति का चक्र घूमता रहता है
सारे कार्य
नियति के चक्र की तरह
यन्त्रवत् चलते रहते हैं
चाहे हृदय के सन्नाटे
अन्दर ही अन्दर
भयंकर हाहाकार करते हैं
बाहर का शोर
अन्दर की घुटन
अपनों के छूटने की
काँटों सी चुभन
सब कुछ कितना दुर्वह होता है।

नेताजी लिखना चाहते हैं

नेताजी ने नारा लगाया
छोड़ो कल की बातें कल की बात पुरानी
सचमुच नेता जी लिखना चाहते हैं
नहीं - बल्कि लिख रहे हैं नई कहानी
इस नई कहानी में
यह कहावत भी चरितार्थ हो रही है
'अंधा बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपने को देय'
ठीक भी है कल की बातें छोड़ना
भला बताइये
आज का नेता पुरानी बातें नहीं छोड़ेगा
तो उसे भी देश के लिए
तन-मन-धन बलिदान करना पड़ेगा
क्या ज़रूरत है खुद शहीद होने की
क्यों न दूसरों को शहीद किया जाये
खुद बुलेट प्रूफ घरों में या कारों में
अंगरक्षकों के घेरे में रह कर
जनता को गोली खाने के लिये
मानव बम बन जाने के लिये
शहीद कहलाने के लिये
क्यों न प्रेरित किया जाये
ये पुराने लोग क्यों नहीं जानते थे
जान है तो जहान है धन है तो मान है
मरने के बाद कहाँ इन्सान है
भैया हमारी तो मुट्ठी में भगवान है
क्या जरूरी है कि जो भूलें पूर्वजों ने करीं
उन्हें हम भी करते रहें
यूँ ही लुटाते रहें बचपन-बुढ़ापा-जवानी

इसलिये मेरा नया नारा है
छोड़ो कल की बातें कल की बात पुरानी
इसलिये वो अतीत भुला कर
लिख रहे हैं नई कहानी
नेता जी के मन को लगे
यह बात ही सबसे सुहानी।
ज़िंदा रहो और
जीभर कर जियो
खाओ पियो और
मौज करो
ज़िंदगी में रहनी चाहिये
रस भरी रवानी
छोड़ो कल की बातें
कल की बात पुरानी

स्मृतियाँ

आज मानस कुंज में
अनोखी सी हलचल है
आँखें कुछ खोज रहीं
हृदय भी उच्छृंखल है
अतीत की गहराईयों से
झाँक रहे कुछ विस्मृत क्षण
कर रहे अन्तस् को
जो व्याकुल उन्मन
स्मृति के प्रांगण में
उठ रहे बवंडर से
प्राणों में उमड़ घुमड़
यादें मचल रहीं
भीग रहा हृदय पटल
सघन अनुभूतियों से
लाख यत्न करने पर भी
यादों में जो छुपे रहे
कैसे कोई भुलाये उन्हें
अपनी स्मृतियों से।

कहाँ जाते हो बदरा

उमड़ घुमड़ तुम कहाँ से आते
और कहाँ जाते हो बदरा
इस धरती की प्यास बुझाकर
खुद प्यासे रह जाते बदरा

अन्तर में तुम आग छिपाए
ढोल नगाड़े खूब बजाते
आग पिघल आँखों से बहती
रिमझिम नीर बहाते बदरा

किस प्रियतम की राह देखते
देश-विदेश घूमते रहते
ढूँढ-ढूँढ जब थक जाते हो
छम-छम अश्रु गिराते बदरा

बिखर गया क्या कोई सपना
बिछड़ गया क्या कोई अपना
किसे ढूँढते युगों-युगों से
दिशा-दिशा तुम जाते बदरा
उमड़-घुमड़ तुम कहाँ से आते
और कहाँ जाते हो बदरा।

बाहर आ जाओ

मेरे बन्धु
स्वप्नों के महलों से बाहर आ जाओ
तुम अपने स्वप्नों से चित्र बना कर
इन महलों को सजा नहीं सकोगे
स्वप्न साकार नहीं हो पाते
स्वप्नों से महलों के
निर्माण नहीं हो पाते
जीवन की गति के साथ
कदम से कदम मिला कर चलो
नींद से निकल कर
वास्तविकता का
जागृति का
ज्योति का वरण करो
स्वप्न स्वयं सत्य हो जायेंगे
स्वप्न सत्य करने के लिये
स्वप्नों के महलों से बाहर आ जाओ
ज़िंदगी स्वयं
तुम्हारा मार्ग प्रशस्त करेगी
तुम्हारी हर साँस तुम्हें आश्वस्त करेगी
तुम्हारे शत्रुओं को निरस्त करेगी
तुम्हारी बाधाओं को ध्वस्त करेगी।

देश की किस्मत

राजनीति के समीकरण समझना
सबके बस की बात नहीं
किसी को शह किसी को मात
किसी पर वशीकरण मन्त्र पढ़ना
सबके बस की बात नहीं
राजनीति के खेल की उठा पटक
अन्दर के अँधेरे बाहर की चमक
कभी धर्म कभी जाति
कभी ऊँच-नीच के नारे
कुछ पता नहीं कब कोई भूल जाये
कभी जोर-जोर से पुकारें
बड़े सँकरे हैं राजनीति के गलियारे
बेहद झूठे बेहद अँधियारे
वोट और नोट के खुले खेल खेलना
लाभ की कसौटी पर परख कर
दल बदल के दलदल में धँसना
एक दल छोड़ कर दूसरा बदलना
नैतिकता के साथ ऐसे खिलवाड़
सबके बस की बात नहीं
जिस दिन नकली नेताओं के
समीकरणों की भाषा
जनता को समझ आ जायेगी
उस दिन
देश की किस्मत बदल जायेगी।

ज़िंदगी के मौसम

ज़माने की खुशियाँ जमाने के ग़म
हैं इनके लिए एक जीवन भी कम
चलें छूने आकाश खुशी जब मिली
लगे सारी दुनिया कमल सी खिली
कदम हर लगे जैसे हम उड़ रहे
कभी हम इधर या उधर मुड़ रहे
लगे जैसे जीवन खुशी ही खुशी
है चारों तरफ बस हँसी ही हँसी
अचानक किसी दिन है झोंका सा आता
लगे जैसे किस्मत ने धोखा किया क्या
बदल जाता पलभर में आलम ही सारा
ग़मों में है छिप जाता किस्मत का तारा
अँधेरा-अँधेरा है सब ओर छाता
ये मन सिर्फ ग़म के तराने है गाता
यूँ ही बारी-बारी से आते और जाते
खुशी और ग़म के तो पक्के हैं नाते
खुशी और ग़म में उलझ कर न जाने
पिघल जाते कब ज़िंदगी के मौसम
है मुश्किल बड़ा फलसफा ज़िंदगी का
है इसके लिये एक जीवन भी कम

✺

रिश्तों की सुबह

रिश्तों की डोरियाँ भी
बड़ी अद्‌भुत होती हैं
कितनी ही बार टूट जायें
फिर भी मज़बूत रहती हैं
रिश्तों की परिभाषा
कोई नहीं पढ़ पाता है
क्योंकि सबसे करीबी रिश्ता ही
सबसे अधिक सताता है
रिश्तों की भाषा की लिपि
कोई नहीं पढ़ सकता
रिश्तों की मनमानी मूरत
कोई नहीं गढ़ सकता
रिश्तों के टूटने और जुड़ने की तिथि
रिश्तों को निभाने की विधि
रिश्तों से दिल की जंग
कोई नहीं कर सकता
सब कुछ जानते पहचानते हुए
कुछ समझौते कर लो
हर रिश्ते को निभाने के लिये
कुछ मुखौटे गढ़ लो
रिश्तों को बदल न सको तो
रिश्तों की मजबूरियाँ तो कम कर दो
बहुत पास न आ सको
पर दूरियाँ तो कम कर दो
शायद किसी दिन तुम्हारे प्रयत्न रंग लायें
दिलों के बीच छिड़ी जंग बेरंग हो जाये
हो सकता है यह कोशिश
हो न बेवजह

रिश्तों के बीच आ जाये
एक नई सुबह
फिर हम कह सकते हैं
हममें नहीं दूरियाँ हैं
ये तो रिश्तों की पक्की डोरियाँ हैं
ये तो रिश्तों की अद्भुत डोरियाँ हैं।
राखी के मज़बूत कच्चे धागों की तरह
रिश्तों की डोरियाँ भी कच्ची हो जाने पर भी
पक्की और मज़बूत रहती हैं
न दिखाई देने वाली ये अदृश्य डोरियाँ हैं
ये रिश्तों की पक्की डोरियाँ हैं

✺

आस और आग

कोयल की कूक सुनी
मन में इक हूक उठी
भूली हुई बात कोई
याद फिर आ गई
मूक पलक झुक गई
अश्रु बूँद रुक गई
शूल से भरी बात
फिर से डरा गई
दिल में इक तड़प हुई
जैसे चुभ रही सुई
कोयल की कूक हूक
अन्तर सुलगा गई
कोयल से कोई कहे
अब तो चुपचाप रहे
भूले किसी अपने की
चाह फिर जला गई
आग जो सुलग रही
चाह जो बिलख रही
कोई आये एक बार
आस इक बुला रही
शायद वह आ जाये
भाग्य मेरा खुल जाये
एक आस जाग कर
आग को बुझा रही।

क्यों ये यादें आकर

जब तब आ जाती हैं सताने
पुराने इतिहास सुनाने
क्यों ये यादें आकर
कानों में गुनगुनाने लगती हैं
सपनों में आकर मुस्कुराने लगती हैं
यादों की एक-एक पुकार
हत्तन्त्रियों को झंकृत कर देती है
अतीत को पल-पल सम्मुख अंकित कर देती है
यादों के झुरमुट से कभी निकल कर आते हैं
कभी अदृश्य हो जाते हैं
कुछ परिचित अपरिचित मुखड़े
जो कभी पूछते हैं कभी सुनाते हैं
कुछ सुख कुछ दुखड़े
यादों की ये अठखेलियाँ चलती रहती हैं
मनाती रहती हैं रंगरेलियाँ
आ-आ कर मचलती रहती हैं
मानव यादों के इस दलदल में
डूबता उतराता
कभी हिम्मत से निकल आता है
कभी फँस जाता है जाकर
क्यों ये यादें
जब तब सताती हैं आकर।

ठहर गईं आँखें

थम गया वक्त रुक गई साँसें
जाने किस ख्याल से झुक गईं आँखें

कुदरत रंगीन है क्यों दिल ग़मगीन है
बरस रहे बादल बरस गईं आँखें

कैसे थे सपने कौन थे अपने
विचारों के जंगल में भटक गईं आँखें

किस-किस के ध्यान में शायद अज्ञान में
भूली बिसरी यादों से छलक गईं आँखें

जाने किस आस में कैसे विश्वास में
पल भर को धोखे में बहक गईं आँखें

वक्त ने बदल डाले रिश्ते और नाते
शून्य में अटक कर रह गईं आँखें

दूर किसी छोर से जुड़ें किसी डोर से
क्षितिज में जाकर ठहर गईं आँखें।

हर युग में

हर युग में जलती है सीता
हर युग में जलती एक चिता
हर युग में नारी का आँचल
छेदों से भरा हुआ होता
माँ के आँचल में दूध भरा
नैनों में नीर भरा होता
होठों पर इक मुस्कान लिये
दिल भीतर से रोता रहता
नारी की आँखों का पानी
बाहर से भीतर को बहता
सबके कृत्यों का प्रमाण
नारी को ही देना होता
उसका कंधा ही ऐसा है
जो बोझ सभी का है सहता
मर मर कर जीती रहती
अपना कर्त्तव्य निभाने को
जीवन भर विष पीती रहती
कुछ अच्छा कर दिखलाने को
औरों को शीतलता देती
खुद के जीवन में आग भरी
औरत की अस्मत की चादर
न जाने कितनी बार जली
झूठा भी कोई दाग़ लगा
तो मरने पर भी नहीं मिटा
हर युग में जलती है सीता
हर युग में जलती एक चिता
नारी का आँचल तो हर युग में

रहता रीता-रहता रीता
चाहे नित्य वह पढ़ती रहे
भागवत रामायण या गीता
हर युग में जलती है सीता
हर युग में जलती एक चिता

स्वार्थ और अर्थ

आज़ादी के गीत
बहुत सुने थे
बहुत गाए थे
हमने भी रामराज्य के
मधुर जाल बुने थे
सपने सजाए थे
आज आज़ादी की आधी सदी बीत गई
आपस का आदर गया, दर्द गया, प्रीत गई
जाति-धर्म-भाषा में बँट गया देश
भूले सब अपनी भाषा अपना परिवेश
नैतिकता की एक नई परिभाषा गढ़ी गई
ऊँचा बनने के लिये एक नई लड़ाई लड़ी गई
राजनीति के समीकरणों में
एक नया अध्याय जोड़ा गया
जिसमें नैतिकता के मानदण्डों को
एक नई दिशा की ओर मोड़ा गया
जो है सबसे बड़ा रिश्वतखोर, भ्रष्टाचारी
जो हो गुण्डा, हत्यारा, बलात्कारी
सबसे बड़ा ताकतवर वही है
उसके पास कभी भी
धन-जन का अभाव नहीं है
जिसके पास है धन और जनशक्ति
उसके पास सब कुछ है
देश-प्रेम और देश-भक्ति
नारे लगाने वाले भी
गद्दी पर बिठाने वाले भी
आज़ादी का अर्थ बदल गया है
सबसे बड़ा धर्म

स्वार्थ और अर्थ रह गया है
खो गये वे मधुर स्वप्न रामराज्य के
जिनके लिये वीरों ने प्राण गँवाये थे
मूक हो गये वे गीत जो शहीदों ने
शहीद होते समय गाये थे।
कहाँ खो गये वे गीत
जो बिस्मिल और भगत सिंह ने गाये
"झंडा ऊँचा रहे हमारा" जैसा
प्रेरणादायी गीत भी लोग भूल गये
स्वार्थ और लालच में
सारे पुराने सपने टूट गये
आज़ादी के गीत
और रामराज्य के सपने
अपने लुटेरे लूट गये।

केवल एक छाया

कल्पना और वास्तविकता के मध्य
केवल एक छाया
विचार और क्रिया के मध्य
हाथों की लकीरों की माया
क्या करना चाहते हैं
कैसी हो कृति
मन तो सदा चाहता है
यश और सुकृति
क्या करना चाहते थे
विधि ने क्या दिखाया
क्रिया और प्रतिक्रिया
सिर्फ एक माया
भूल जायें यश अपयश
कृति और सुकृति
मनमन्दिर में सजा लें
एक छोटी सी आकृति
भूल जायें लकीरों को
याद करें हाथों को
कुछ दिन को भूल जायें
अनचाही मुलाकातों को
पहुँच जायें मर्म में
जुट जायें कर्म में
ध्यान धरें केवल
क्रिया के धर्म में
जब गति और विधि का
भेद मिट जायेगा
क्रिया और कर्म में
एकत्व आ जायेगा

आत्मा में एक अनोखा
तत्व समा जायेगा
कहीं से आयेगा
एक नूतन प्रकाश
जगायेगा हममें
एक अद्भुत विश्वास
हट जायेगी कल्पना और वास्तविकता के
मध्य की छाया
विचारों को मिलेगा एक साकार रूप
कल्पना को मिलेगी एक सुन्दर काया।

उलझे बाल

भूल कर उम्र भर अपना हाल हम
सुलझाते रहे वक्त के उलझे बाल हम
वक्त ने उलझनों से कभी निकलने न दिया
दिल को पल भर भी कभी बहलने न दिया
हादसों ने कभी न छोड़ा हमें
दर्द ही से हमेशा जोड़ा हमें
कुछ हैं यादें जिन्हें भुला न सके
कुछ हैं अरमाँ जिन्हें सुला न सके
सबको हम अपना ही बनाते रहे
दर्द दे दे के लोग जाते रहे
दर्द कुछ ऐसे हैं जिनकी दवा भी नहीं
कैसे चलायें ज़िंदगी की बिगड़ी चाल हम
सबको खुश रखने की चाहत में
खुद को रखा कभी न राहत में
खुद को बाँधा किए ज़ंजीरों में
खुद को शामिल किया फकीरों में
खुश तो फिर भी न कोई हमसे हुआ
रिश्ता अपना तो सिर्फ ग़म से हुआ
फूल देकर भी काँटे पाते रहे
हम तो टुकडों में बाँटे जाते रहे
ज़िंदगी अब बोझ बनती जा रही
कैसे बितायें जिंदगी के चंद साल हम
भूल कर उम्र भर अपना हाल हम
सुलझाते रहे जिंदगी के उलझे बाल हम।

टुकड़ा-टुकड़ा ज़िंदगी

अगर सिर्फ जीना ही ज़िंदगी है
तो कितने हैं
जो सचमुच जी रहे हैं
कितने हैं
जो ज़िंदगी के पल-पल में
ज़हर के घूँट नहीं पी रहे हैं
कितने हैं
जो ज़िंदगी जी रहे हैं काट नहीं रहे
कितने हैं
जो ज़िंदगी को टुकड़ों में
बाँट नहीं रहे
यह टुकड़ा-टुकड़ा ज़िंदगी
क्या ज़िंदगी है
यह मौत के दिन गिनती ज़िंदगी
क्या सचमुच ज़िंदगी है
कदम-कदम पर धोखे
और फरेब सहती ज़िंदगी
बिन पतवार की नाव सी बहती ज़िंदगी
टूटते सपनों को बटोरती ज़िंदगी
अपनों के दिये घाव सहलाती ज़िंदगी
क्या वही ज़िंदगी है
लेकिन हमें वक्त रहते टुकड़ों को बटोरना है
टुकड़ा-टुकड़ा जोड़ कर सीना है
ज़िंदगी को काटना नहीं जीना है।

बुलंदी

खुद को ऊँचा उठाने के लिये
सामने वाले को नीचे गिराना नहीं
खुद को उससे ऊँचा उठाना ज़रूरी होता है
जो सामने वाले को गिरा कर
ऊँचा उठना चाहता है
वह जीवन भर रोता है
दूसरों के लिये गड्ढा खोदना
अनीति है
स्वयं के लिये ऊँचाइयाँ खोजना
सुनीति है
अपने श्रम से प्राप्त ऊँचाई
स्थाई होती है
दूसरे के श्रम पर प्राप्त बुलंदी
पराई होती है
खुदी को
खुद्दारी से बुलंद करने वाले ही
खुदा के बंदे होते हैं
उन्हीं से खुदा पूछता है
बता क्या है तेरी रज़ा
और यही है ऊँचा उठने की
असली खुशी
बुलंदी के अहसास का
असली मज़ा।

मैं कबीर बन जाऊँ

एक बना छोटी सी कुटिया
दूर कहीं जंगल में जा कर
बड़े-बड़े पेड़ों के नीचे
घनी घास के बीच कहीं मैं गुम हो जाऊँ
या जाकर छुप जाऊँ वन की
किसी अँधेरी घुप गुफा में
सूरज भी न ढूँढ सके
मैं जग से जाकर
दूर कहीं खो जाऊँ या
सागर की गोदी मिल जाये
किसी अकेले
नीरव निर्जन विजन द्वीप में
जैसे मोती छिपे सीप में मैं छुप जाऊँ
या फिर दूर क्षितिज के नीचे
जहाँ चूमता नभ अपनी
प्रियतमा पृथा को
मैं भी जाऊँ
पहुँच जाऊँ क्षितिज में
उनके चरणों में झुक जाऊँ
कभी चाहती चढ़ जाऊँ ऊँचे पर्वत पर
या फिर डालूँ डेरा
मरुथल से सूने मरघट पर
जन्म मरण का सत्य खोज लूँ
मैं कबीर बन जाऊँ

आत्मा राम

कभी-कभी रात के सन्नाटों में
हृदय और मस्तिष्क भटकने लगते हैं
अपने इस शरीर रूपी
अभिशप्त महल के हर कोने में
मेरे विचार न जाने क्या ढूँढने लगते हैं
भावनाओं का प्रस्फुटन
रोम-रोम से होने लगता है
अन्तर्निहित अनुभूतियाँ
हृदय चीर कर बाहर आना चाहती हैं
श्वास प्रश्वास से
हाहाकार की ध्वनि आती है
तभी बचपन का सुना
एक भजन याद आ जाता है
"तेरे अन्दर आतमदेव"
और मैं सब कुछ भुलाकर
अपने आत्माराम में
स्वयं को आत्मसात करने का
नीरव प्रयास करने लगती हूँ।

रिमोट

भीड़ की इस भेड़ चाल में
किसने क्या पाया किसने क्या खोया
सब गौण है
किसी को पता नहीं
किस जुनून में सब
किसको जलाने के लिये भाग रहे हैं
किसका घर जलेगा
किसके घर का दीया बुझेगा
सब बेमानी है
सिर्फ जुनून ही
इस वक्त की कहानी है
वे नहीं जानते कि अमीरों के महल
इस आग में कभी नहीं जलते
इस जुनून में जब भी जलते हैं
भीड़ में भागते
इन गरीबों के ही घर जलते हैं
फिर भी ये भाग रहे हैं
ऊँचे महलों में लगे रिमोट
इन्हें हाँक रहे हैं
इनका रुख गरीबों की बस्ती की तरफ
मुड़ जायेगा
बस्ती जलने के बाद
गगनचुम्बी इमारतों में
एक नाम और जुड़ जायेगा।

देना पावना

किसी को कुछ दे दिया
किसी से कुछ ले लिया
इस तरह कुदरत ने अपना
देना पावना बराबर कर लिया
किसी को ज़िंदगी दी किसी से छीन ली
किसी की झोली खुशियों से भर दी
किसी की झोली से एक-एक बीन ली
किसी को एक से लाख मिला
किसी को लाख से ख़ाक मिला
कोई कीचड़ में कमल बन गया
कोई खुद ही दलदल में बदल गया
किसी हाथ में हर रेखा भाग्यरेखा है
किसी हाथ ने भाग्य रेखा का नाम ही नहीं सुना
किसी ने दूसरों की राहें भी सँवार दी
किसी ने स्वयं के लिये ही नित नया जाल बुना
जीवन में हर दिन नई-नई कहानियाँ बनती रहीं
कुछ समय की गर्द में छुप गईं
कुछ प्यारी निशानियाँ बन कर रहीं
चलता रहा जीवन
इन्सान ने अपना रास्ता चुन लिया
किसी को कुछ कह दिया
किसी से कुछ सुन लिया
इस तरह कुदरत ने अपना
देना पावना बराबर कर लिया।

निर्मोही का प्यार

मैंने क्यों आँचल से बाँधा निर्मोही का प्यार
मोह छोड़ जो चला जा रहा उसका क्या आधार

चला जायेगा दूर सफर पर जब मन में आयेगा
कहीं दूर ओझल आँखों से साथी हो जायेगा

कितनी भी आवाज़ लगाऊँ वह तो नहीं सुनेगा
छोड़ यहाँ सब संगी साथी अपनी राह चुनेगा

दूर कहीं पर्वत जंगल में जा कर बस जायेगा
विनती और चिरौरी से भी पास नहीं आयेगा

बीतेगा दिन शाम ढलेगी छायेगा अँधियारा
बैठी उसकी राह तकूँ जो लायेगा उजियारा

लेकिन जाने वाले भी क्या लौट कभी आते हैं
जितना उनको याद करो वो उतना तड़पाते हैं

फूलों के बदले दे डाला काँटों का संसार
मैंने क्यों आँचल से बाँधा निर्मोही का प्यार

जिसको अपना खिवैया समझा छोड़ गया मँझधार
मोह छोड़ जो चला जा रहा उसका क्या आधार।

निर्मोही से प्रीत करी क्यों चाहा क्यों था प्यार
मोह लगा पल भर का जिसने लूट लिया संसार

मैंने जिसको समझ लिया था जीवन का उपहार
कहाँ अचानक चला गया वह देकर अमिट प्रहार

कुछ दर्द

बहुत से जख़्म
सहेज कर रखने की चीज़ होते हैं
इन्हीं ज़ख़्मों के दर्द
इन्सान को
इन्सान बने रहने में मदद करते हैं
कुछ दर्द छुपा कर रखने में ही
मानवता निखरकर बाहर आती है
अन्दर के ये दर्द
दूसरों के दर्द महसूस करने की
दूसरों के अहसासों को समझने की
क्षमता देते हैं
वरना इन्सानियत बिखर कर रह जाती है
अन्दर समेटे हुए ये दर्द
हमको टूटने नहीं देते
जब तक अन्दर हैं रहते
दूसरों से कुछ नहीं कहते
तब तक किसी को हमें
लूटने नहीं देते
इन्हीं दर्दों की छाँव तले
हम 'मैं' को भुला कर
सबको अपना समझ सकते हैं।

शायद

दीपक मेरा जला रात भर
एक आस अन्तर में भर कर
शायद पथ भूला राही घर
आए जलती शमाँ देख कर
कैसे दीपक जले स्नेह बिन
कैसे काटें रातें गिन-गिन
डोर साँस की लगी टूटने
साँस रुक रही पल-पल छिन-छिन
बुझने लगा दीप अब मेरा
घिरा आ रहा तिमिर घनेरा
एक किरण कहती है फिर भी
शायद आये नया सवेरा
कैसा जग का ताना बाना
बिछड़ा जिसको अपना माना
दिया भोर का बुझने वाला
शायद निकले सूर्य सुनहरा।

कल्पनाओं की उड़ान

निर्बन्ध निस्सीम
कल्पनाओं की उड़ान पर
कोई बन्धन नहीं होता
किस को किस परिप्रेक्ष्य में देखे
किस को किस सन्दर्भ से जोड़े
किस की कैसी प्रतिमा बनाये
क्या याद करके रोये
क्या याद करके गाये
परिचय और अपरिचय के
लहराते धागों को पकड़ कर
कल्पना की पतंग
ऊँचे से ऊँचे आकाश तक उड़ आती है
धरती से पाताल तक घूम आती है
मन न जाने क्या-क्या सोचता है
कभी मुस्कुराता है
कभी आँसू पोंछता है
क्षण में देख लेता है महलों के सपने
पल भर उनमें रह कर
लौट आता है घर अपने
कल्पना ही सृजन की शक्ति है
कल्पना की उड़ान ही
कवि की आसक्ति है
कल्पना की मूर्ति ही
कवि की भक्ति है, वृत्ति है, कृति है।

कुदरत

नीचे विशाल सागर
ऊपर असीम अम्बर
कुदरत विहँस रही है
देखो बनी दिगम्बर
लहरें लगा रही हैं
क्या ज़ोर के ठहाके
अम्बर दिखा रहा है
जलवे अजब जहाँ के
पेड़ों की पत्तियों से
छू कर हवा निकलती
तो साज़ बज सा जाता
धुन सी कोई मचलती
ये पेड़ जो खड़े हैं
सागर के तट के ऊपर
प्रहरी खड़े हैं मानो
सागर की लहरियों पर
काली घटायें घिर कर
झूमे हैं जब गगन पर
करती है नृत्य विद्युत
सुरमई बदलियों पर
कैसे प्रकाश देते
ये सूर्य चाँद तारे
है कौन इनका स्वामी
हैं किसके वश में सारे
कोई न दे सका है
इस गूढ़ प्रश्न का उत्तर
कुदरत ने कर दिया है
सब सृष्टि को अनुत्तर

जिसे देख भर रही है
मेरे भावों की गागर
ऊपर असीम अम्बर
नीचे विशाल सागर
कुदरत के ये करिश्मे
वाह इनका क्या है कहना
फूलों में रंग भरना
कुदरत का ये विहँसना
बाँसों के झुरमुटों से
आती पवन के ये स्वर
जैसे बजा मुरलिया नाचे
गोकुल का नटनागर
नीचे विशाल सागर
ऊपर असीम अम्बर
कुदरत विहँस रही है
देखो बनी दिगम्बर।

जीवन के नाते

भूलने से अगर
भुलाये जा सकें
वे लोग
जो अक्सर याद आते हैं
तो शायद मुझे भी
समझ में आ जायें
कैसे ये जीवन के नाते हैं
कभी कोई बिल्कुल अनजाने
जो अब तक थे बेगाने
क्षण भर में बन जाते है अपने
आँखों में बस जाते हैं
बन कर सुन्दर सपने
फिर वही अपने
रेत की तरह फिसल कर
निकल जाते हैं हाथों से
फिर रात दिन आकर
सताते हैं यादों में
जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी यही है
जिनकी यादें सबसे अधिक सताती हैं
पल-पल छिन-छिन तड़पाती हैं
सबसे अधिक याद
आते भी वही हैं
जितना भुलाओ
उतना याद आते हैं
मानव की त्रासदी
ये जीवन के नाते हैं।

वादा करता हूँ

मेरे प्यारे बहनों और भाईयों
चुनाव का वक्त है मुझे छोड़ के मत जाईयो
यही वक्त है जब हमारी मुलाकात होती है
वरना आप लोगों से कहाँ बात होती है
आप लोगों से मिल कर होती है प्रसन्नता
पर देखी नहीं जाती आपकी विपन्नता
मेरा दिल बहुत कमज़ोर है
सह नहीं पाता आपका दर्द
इसीलिये पाँच साल में एक बार आता हूँ
झाड़ने रिश्तों की गर्द
एक बार नेता जी सुभाष बोस ने कहा था
तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा
आज मैं भी वादा करता हूँ
तुम मुझे वोट दो मैं तुम्हें नोट दूँगा
मुझ पर दया करके मेरी कुर्सी वापिस दिला दें
मैं भी कोशिश करूंगा पूरे करूं अपने वादे
जो बाकी रह जायेंगे
वो अगले चुनाव के बाद पूरे हो जायेंगे
ऐसे ही हम और आप मिलजुल कर रहते जायेंगे
आप मेरे लक्ष्य से मुझे मिलवाते रहना
मैं भी आपसे वादे करता रहूँगा
आप भी अपनी जिंदगी जीते रहना
मैं अपनी कुर्सी पर जीता रहूँगा।

शब्द गन्ध

रूप आकार रहित शब्द गन्ध
अपने अप्रत्यक्ष रूप में भी
साकार रूप धारण कर
हृदय और मस्तिष्क के मार्ग से
पूरे तन-मन में व्याप्त हो
अनुभूति की चरम परिणति को प्राप्त हो
मानव के अस्तित्व को सुवासित करती है
एक पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करती है
यह मधुर गन्ध
एक व्यक्ति को
दूसरे व्यक्ति से जोड़ देती है
मानव की सोच और कृत्यों को
नई-नई दिशाओं में मोड़ देती है
यह शब्द की गन्ध पर निर्भर है
कि वह ठहरा हुआ पानी या निर्मल निर्झर है।

दिल की गहराई

दिल अगर दर्द से भर जाये तो भर जाने दो
दर्द और दिल का तो रिश्ता ही बुरा होता है

जितना सह सकता है दिल उतना तो सह जाने दो
ग़र न सह पाये तो दिल ज़ार-ज़ार रोता है

दिल का ये दर्द जब हद से गुज़र जाता है
जागता ये दिल है जब सारा जहां सोता है

कितना कोई खुद को बचाये न बच पाता है
जाने इस दिल के हाथों बशर क्या खोता है

दिल के हाथों हुए मजबूर न बच पायेंगे
दिल ही बस एक खुदा और तो सब धोख़ा है

दिल की गहराई कहाँ कैसे पता करे कोई
कैसे नप पायेगी पैमाना तो यह छोटा है

दिल की गहराइयों में छुपी रहती हैं यादें कितनी
यादें जब आयें निकल कर तो ये दिल रोता है

दिल के फुसलाने से काम करता बहुत से इन्सान
लेकिन काटता भी वही है जो वह बोता है

दिल के दर्द पर लिखा बहुत कुछ लिखने वालों ने
लेकिन महसूस वही कर सके दर्दे दिल जिसे होता है

दिल अगर दर्द से मरता है तो मर जाने दो
दर्द और दिल का तो रिश्ता ही बुरा होता है

न कुछ कहना

न कुछ कहना
न कुछ सुनना
तुमको हमसे
हमको तुमसे
जो सुनना हो तुमको हमसे
जो कहना हो तुमको हमसे
खामोशियों से कहना
खामोशियों से सुनना
जो जज़्बात मचलते दिल में
उन्हें होठ तक भी न लाना
जो मेरी तुम सुनना चाहो
उसे पूछने भी मत आना
सरगोशियों में सुनना
सरगोशियों में कहना
हालात जो भी हों तुम
चेहरे पे मत दिखाना
चेहरे को अपने दिल का
आईना मत बनाना
मदहोशियों में कहना
मदहोशियों में सुनना।

लोग यूँ समझा किये

चाँद के आँसू को हम यों
चाँदनी समझा किए
जैसे जलती शमा को हम
रौशनी समझा किये
आग बरसी क्रोध से
जो सूर्य की
प्राणदायी धूप हम
समझा किये
विरह में रोया पपीहा तड़प कर
और राग हम समझा किये
हूक कोयल की जो निकली
कूक हम समझा किये
हमने अपना ग़म छुपा कर
जो हँसी हँस दी ज़रा
वो खुशी की दास्ताँ है
लोग यूँ समझा किये
तीर दुनिया के छुपा कर
दिल को छलनी कर लिया
हम बड़े बेशर्म हैं बस
लोग यूँ समझा किये
क्यों बहायें उनके आगे
क्यों दिखाये उनको हम
जिनकी ख़ातिर दिल ही दिल में
आँसू हम अथाह पिया किये।

न छत है न आँगन

आसमान तक ऊँचे उठते
सुरसा के मुख से फैलते
कंक्रीट के इन जंगलों ने छीन लिया
मचलती हवाओं को
सुरमई घटाओं को
बारिश की बौछारों को
नन्हीं नन्हीं फुहारों को
कोयल की कूक को
पपीहे की हूक को
बादलों की कड़क को
बिजलियों की चमक को
कुदरत के करिश्मों को
आकाश से कूदते चशमों को
पानी के बहाव को
कागज़ की नाव को

धरती से उठती
माटी की सोंधी सुगन्ध को
फूल पौधों से आती
हरियाली की गन्ध को
तीजों के झूलों को
सावन के गीतों को
बाँहें फैला कर उठा कर मुख को
वर्षा का सारा जल
अपने अन्दर भर लेने के सुख को
घुटती हैं साँसें इन ऊँची दीवारों में
कहाँ गये मेरे वो नन्दन कानन
ऊँची नीची पहाड़ियाँ

मेरे वन उपवन
अब तो न छत है न आँगन
कैसे मनाऊँ सावन
कौन सुनेगा मेरा क्रन्दन
कौन रोकेगा
कंक्रीट के इन जंगलों का
भयावह नर्तन।

कितने सपने

दिल में छुपे हैं कितने
अरमान क्या बताऊँ
सपने हैं कितने देखे
कैसे तुम्हें दिखाऊँ
भर लूँ मैं चाँदनी को
अपनी हथेलियों में
तारों की भाषा सीखूँ
बूझूँ पहेलियों में
पर्वत की चोटियों पर
जाकर मैं झूल जाऊँ
सुख दुख की सारी गाथा
जंगल में भूल आऊँ
सागर की लहरियों पर
झूमूँ करूँ मैं नर्तन
खिल-खिल हँसी बिखेरूँ
भूलूँ मैं सारा क्रन्दन
झूले हवा के झूलूँ
पींगें बड़ी बढ़ाऊँ
पेड़ों को जा के छू लूँ
पंछी सी उड़ के आऊँ
पेड़ों की डालियों पर
बैठूँ मैं झूम जाऊँ
सूरज के रथ पे जाकर
दुनिया मैं घूम आऊँ
दिल में छुपे हैं कितने
अरमान क्या बताऊँ।

नई रचना

निराशा के अँधेरों से
आशा की किरणें
जब खींच लाओगे
तभी वक्त के थपेड़ों से
तुम बच पाओगे
स्वार्थ और अविश्वास की
कृतघ्नता भरी दुनिया से
अपने निःस्वार्थ विश्वास को
जब बचा पाओगे
तभी तुम
ज़िंदगी का सच पाओगे
आकाश से ऊँचाई
धरती से सहनशक्ति
सागर से गहराई
और भक्त से भक्ति
इन सबको ग्रहण करके ही
तुम एक नई रचना
रच पाओगे
जब तक तुम्हारा हृदय भरा रहेगा
आशा, निःस्वार्थ विश्वास शक्ति, भक्ति से
तभी तुम अपनी भावनाओं की और स्वयं की
सुन्दर मूरत गढ़ पाओगे
और जीवन का सच पाओगे
नई रचना कर पाओगे।

उलझा हर हिन्दुस्तानी

मेरे देश में क्यों हर कदम पर नई परेशानी है
हम खुद ही इसके जिम्मेदार हैं यही परेशानी है
मौलिक अधिकार याद रखते हैं भूल जाते हैं कर्त्तव्य
बोलने की आज़ादी दे वे डालते हैं कोई भी वक्तव्य
पहले तोलो फिर बोलो की सीख भुला देते हैं
ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, जात-पात की आग जला लेते हैं
एक दिन में अमीर बन जाने की चाहत बढ़ रही है
नैतिकता धन-दौलत की बलि चढ़ रही है
भूल गए आचार विचार सबकी एक ही कहानी है
अत्याचार, भ्रष्टाचार, बलात्कार सबकी मनमानी है
नेता अभिनेता सब एक ही से लगते हैं
नेता जी तो अभिनेता से भी अच्छा अभिनय करते हैं
उनका भरे गले से बोलना आँखों के मगरमच्छी आँसू
वोटरों की आँखों में भर जाते हैं स्थायी आँसू
न जाने कहाँ छुप जाते हैं वो वोट लेने के बाद
आँखें बिछाये राह तकता है वोटर वोट देने के बाद
वोट देना ठीक है या हमारी नादानी है
आज इस प्रश्न में उला हर हिन्दुस्तानी है
अलग-अलग दलों ने बड़ी धूम मचाई है
अन्दर से सब चोर-चोर मौसेरे भाई हैं
सभ्यता-संस्कृति के टुकड़े-टुकड़े हो गये
विमल निर्मल स्वच्छ दिल जाने कहाँ खो गए
फिर भी देश चल रहा है मुझको हैरानी है
मेरे देश में क्यों हर कदम पर नई परेशानी है।

कौन देगा न्याय

बेटी गरीब की हो या अमीर की
आँखों में कुछ सपने संजो कर रखती है
हर बेटी बाबुल के घर से विदा होते समय
नैहर छूटो जाये सोच कर रोती है
पर कभी-कभी
गरीब की बेटी के सपने अधूरे रह जाते हैं
उसकी चूड़ियाँ और कंगन लाने वाले
रास्ता भूल जाते हैं
चले जाते हैं दहेज वाली दुल्हन के घर
रखते हैं दौलत दिलों में सहेज कर
बिना दहेज की दुल्हन
उन्हें मंजूर नहीं
चाहे इसमें बेचारी दुल्हन का
कोई भी कसूर नहीं
अधूरी रह जाती है उसकी तमन्ना
अँधेरों में खो जाते हैं
चूड़ी और कंगना
कौन करेगा प्यार
इन किस्मत की हेठियों को
कौन देगा न्याय
समाज की इन बेटियों को।

सुहानी मंज़िल

हज़ारों मंज़िलें दुनिया में
सबका मन लुभाती हैं
मगर मिलती वही इन्सां को
जो किस्मत मिलाती है
मगर सब छोड़ दें किस्मत पे
ऐसा तो नहीं होता
है चलता राह पर इन्सां
कभी हँसता कभी रोता
कभी हाथों में आई मंज़िलें भी
छूट जाती हैं
कभी अपनों से अपनों की
निगाहें रुठ जाती हैं
कभी राहों पे चलते-चलते
आ जाते हैं चौराहे
नहीं आता समझ में
अब कहाँ जायें किधर जायें
मगर चलते चले जाना ही
जीवन की निशानी है
कंटीली राह पर चल
सामने मंज़िल सुहानी है।

खुशी बाँट दो

सुनाओगे तुम किसको अपना फसाना,
सभी के हृदय में छिपे घाव हैं,
और होठों पे मुस्कान की झूठी परतें लिये,
हैं सभी गा रहे जिंदगी का तराना।
सुनाओ किसी को न दुःख दर्द अपने,
ये संसार तो एक दरिया है ग़म का,
रिझाते हैं सब खुद को खुशफहमियों से,
हर इक आदमी दिल एक घायल लिये है,
हर इक दिल तुम्हारे दुखी दिल का साथी,
दुःखी दिल को बन्धु कभी न दुखाना।
भरे हैं बहुत तीर दुनिया के तरकश में,
व्यंग और उपहास या झूठे वादे,
मगर याचना तुमसे इतनी ही है कि,
बनाना नहीं तुम किसी को निशाना।
छुपा लो सभी दर्द तुम सात परतों में,
बाँटो खुशी सबके ग़म को भुला दो,
हँसी और खुशी के खजाने लुटा दो,
अगर तुम हँसोगे, हँसेगा ज़माना।
कभी घेर लें न अंधेरे निराशा के,
तुम गाते रहना मधुर गीत आशा के
ईमान पर अपने करना भरोसा,
न खुद हारना न किसी को हराना।

उम्मीदों के चिराग

दिल में उम्मीदों के चिराग़ जला लेते हैं
खुद ही खुद को उलझनों में उलझा लेते हैं
जिनको 'अपना' लफ्ज़ का मतलब भी नहीं आता
उनको अपना समझने की हिमाकत कर लेते हैं
बेवफाई है जिनका पसंदीदा शुग़ल
उनसे वफा की उम्मीद लगा लेते हैं
जो चले जाते हैं न आने के लिये
उनके आने की उम्मीद लगा लेते हैं
काँटे देना ही जिनकी आदत है
उनसे फूलों की उम्मीद जगा लेते हैं
जो आते हैं ज़िंदगी में अँधेरे देने
उनसे रौशनी की उम्मीद जगा लेते हैं
दोस्त हमें शायद ज़िंदगी का मतलब नहीं आता
ज़िंदगी की उम्मीद में गले मौत लगा लेते हैं।

जनता की याददाश्त

राजनीति की दौड़ में
दाँव पेंच जोड़ कर
अपने पराये
सबको पीछे छोड़ कर
सरपट दौड़ कर
कुर्सी पर जा बैठे
आजकल वो फिरते हैं
अकड़े-अकड़े
ऐंठे-ऐंठे
आजकल उन्हें
सिर्फ एक चिन्ता है
कैसे लिपट जाऊँ कुर्सी से
कोई ऐसा गोंद मिल जाये
जो हमेशा के लिये
चिपक जाऊँ कुर्सी से
समझ में नहीं आता
ये जनता की याददाश्त
इतनी तेज़ क्यों होती है
जो कसमें वादे
हम चुनाव जीतते ही
भूल जाते हैं
उन्हें वह पाँच वर्ष तक
क्यों याद रखती है
कैसे याद रखती है।

लाचार

जब कभी मेरे हृदय का
टूट जाता तार है
जब कभी मेरे हृदय पर
बरसते अँगार हैं
जब कभी भी लक्ष्य पथ पर
छूटता आधार है
जब कभी सपने मेरे
लुटते सरे बाज़ार हैं
जब ये लगता आदमी की
ज़िंदगी बेकार है
तब हृदय में
एक अन्तिम
भाव आता है मेरे
भाग्य खेले आदमी से
आदमी लाचार है
लेकिन तभी खोलने को मेरे नयन
आ जाती है एक प्रकाशमयी किरण
जोड़ देती है दिल के टूटे तार
मानो एक दैवी स्वर कह रहा है
ज़िंदगी बेकार नहीं है
तू भी लाचार नहीं है
उठो आगे बढ़ो
जोड़ लो सारे टूटे तार।

कुण्ठा

कभी-कभी अन्तर की कुण्ठा
सारे बाँध तोड़ कर
काली कमली ओढ़ कर
मुँह छिपाये
बाहर आ ही जाती है
पूछती है बार-बार कुछ प्रश्न
क्यों बनाये हैं कुछ शब्द
केवल कुछ लोगों के लिये
नम्रता
सहिष्णुता
उदारता
क्यों कुछ ही लोग
इन्हें ओढ़ कर जियें
क्या देता है आज का समाज
इन गुणों के बदले
निरन्तर परिहास,
शोषण
और अपमान के सिलसिले
शायद अब
बदलनी होगी
जीवन की परिभाषा
अपनानी होगी
जैसे को तैसे की भाषा।

तकदीर और तदबीर

छोटी-छोटी बातों की कहानियाँ बन जाती हैं
छोटे-छोटे दुख की निशानियाँ बन जाती हैं
माँ-पिता के घर में जन्म लेती है बेटी
कोई किस्मत की धनी कोई किस्मत की हेठी
एक साथ बाबुल की बगिया में महकीं
एक साथ मैया के अँगना में चहकीं
एक साथ डोली उठी पी के घर आई
विधि ने रेखाएं पर भिन्न थीं बनाई
विधि की रेखाओं से कहानियाँ बन जाती हैं
कुछ दासियाँ कुछ रानियाँ बन जाती हैं
दो साथी साथ पढ़े घर में विद्यालय में
साथ-साथ पूजा करी जाकर शिवालय में
एक के हाथ लगे लाख का ख़ाक हुआ
दूसरे के भाग्य से ख़ाक भी लाख हुआ
ऐसे ही चक्र में जवानियाँ जल जाती हैं
कहीं रौशनी कहीं वीरानियाँ छा जाती हैं
पर कोई एक है जो सबसे ऊपर बैठा
वही गणित लगाता है कौन भाग्य का धनी कौन हेठा
वही तौलता है तकदीर और तदबीर को
यूँ ही नहीं छोड़ देता अपनी ताबीर को
उसने ही इन्सान और किस्मत को बनाया
फिर क्यों इन्सान ने उसको भुलाया
उस पर अविश्वास ही नादानियाँ कहलाती हैं
तकदीर और तदबीर ही कहानियाँ बनाती हैं।

वक्त

वक्त की तलवार ने पर काट डाले।
वक्त की दीवार ने मन बाँट डाले।

वक्त ने अपनों को बेगाना बनाया।
वक्त ने दिल चीर दीवाना बनाया।

वक्त ने खुशियों के सपने तोड़ डाले।
वक्त ने सब रास्ते ही मोड़ डाले।

वक्त ने मंज़िल की राहों को भुलाया।
वक्त ने अपने इशारों पर झुलाया।

वक्त रुठे तो ज़माना रुठ जाये।
वक्त खुश तो सब कलेजे से लगायें।

वक्त का ही खेल सारा इस जहाँ में।
वक्त ही बस इक खुदा है इस जहाँ में।

वक्त की तलवार तो सब पर है चलती।
वक्त की दीवार पल-पल रंग बदलती।

वक्त उठा देता कभी अपनों में दीवारें।
वक्त चलवा देता अपनों में तलवारें।

वक्त ही गिरा देता अपनों की दीवारें।
वक्त कहता जाओ अपनों को गले लगाने।

विश्वास

जब कभी भी राह चलते
याद आ जाये हमारी।
तो झुका कर आँख,
मन में झाँक लेना।
हम कहीं भी हो,
रहेंगे दिल के भीतर।
तुम हमारा मूल्य,
मन में आँक लेना।
ज़िंदगी का मोड़ कोई हो,
रहेंगे साथ ही हम।
तुम मुझे अहसास से,
पहचान लेना।
तुम कहीं भी जाओ
तो मुड़ कर ठहरना।
और मेरी आवाज़ को,
आवाज़ देना।
मंज़िलें पायें न पायें,
ग़म नहीं है।
पर मेरे विश्वास को,
विश्वास देना।

आकाक्षाओं की उड़ान

जब तब मेरी आकाक्षायें
चिड़ियों की तरह पंख पसार कर
उन्मुक्त गगन के उस पार
क्षितिज के प्रान्तर तक
धरती से अम्बर तक
सागर की लहरों तक
गुफाओं के गह्वरों तक
पाताल की नीचाइयों तक
सागर की गहराइयों तक
उड़ जाना चाहती हैं
मेरे मन के पिंजरे में कैद पंछी
अब भी नन्ही मुनिया की आँखों से
दुनिया देखना चाहता है
मेरे अन्दर छुपी नन्हीं बालिका
प्रकृति के हर रंग को
प्रकृति के हर अंग को
अपने हाथों से छूकर
तन-मन से डूब कर
महसूस करना चाहती है
काश मेरे नन्हें पंख
मेरी आकाक्षाओं की
ऊँची नीची उड़ानें भर सकें
मेरे स्वप्न साकार कर सकें।

तुम

इस जीवन की मरुभूमि में
आए बन नव-जल घन-सम तुम

रीता-रीता मेरा जीवन
था मौन शून्य जीवन नर्तन
तब आये तृषित चातकी के बन
वर्षा के पहले जल तुम
इस जीवन की मरुभूमि में
बन-नव-जल घन-सम तुम आये

जब-जब घन बदरा छाए
अन्तस के अंकुर मुरझाए
आए जब तुम फूला उपवन
आए ऋतु राज सुहावन तुम
इस जीवन की मरुभूमि में
आए बन नव-जल-घन-सम तुम

कैसा है यह जीवन दर्शन
कैसा होता यह आकर्षण
कैसा होता अटूट बन्धन
जब जीवन में कुछ शेष न था
बन कर विशेष तब आये तुम
इस जीवन की मरुभूमि में
आये बन नव-जल घन-सम तुम।

अन्तर की अग्नि

सागर के किनारे बैठना
अपने आप में एक अनोखी अनुभूति है
ऊपर और नीचे
दूर तक फैला हुआ
नीला काला सन्नाटा
इस असीम निस्सीम सन्नाटे में
सिमटा बैठा मेरा नन्हा सा वजूद
किन्तु इस अथाह खामोशी में
मुझे सुनाई दे रहा है
अपने नन्हें से शरीर के नन्हें से दिल में
ठाठें मारता सागर
हाहाकार करता भयंकर तूफान
हहराती लहरों का शोर
आँखों के आगे शून्य घनघोर
कानों में बजती अनहद नाद सी
ढोल नगाड़ों घंटे घड़ियालों की
अदृश्य कर्ण भेदी ध्वनि
सामने फैला असीम सन्नाटा
अंदर का असहनीय शोर
यह सागर अपने अंदर
इतना जल भर कर भी
क्यों नहीं बुझाता
मेरे अन्तर की अग्नि।

आने जाने का नाता

विधाता के भी
कैसे-कैसे रंग हैं
अपनी इच्छाएं पूर्ण करने के
नए-नए ढंग हैं
कैसा अनोखा क्रम चला रखा है
प्रकृति के हर रंग को
अपने ढंग से सजा रखा है
नए नियमों को जगह देने के लिए
पुराने नियम बदलते हैं
पेड़ों से झड़ते पीले पत्तों की जगह
हरे पत्ते मचलते हैं
वृद्ध जन छोड़ते शरीर
नई पीढ़ी के लिए
बन जाते हैं नींव के पत्थर
ऊँची सीढ़ी के लिए
एक जाता है
दूसरा आता है
सबका आपस में
आने-जाने का नाता है
अगर बदलने का यह क्रम
रुक जायेगा
तो संसार का
अच्छे से अच्छा नियम भी
रुके हुए पानी की तरह
गँदला हो जायेगा
नए के लिए—
पुराने को जगह खाली करनी है
नए को —

पुराने की खाली जगह
नए विचारों के साथ भरनी है
क्यों न कहें हमारे मन में भी
नई उमंग है
हम और प्रकृति दोनों ही संग हैं
विधाता के भी कैसे-कैसे रंग हैं
अपनी इच्छायें पूर्ण करने के
नए-नए ढंग हैं
विधाता के भी
कैसे-कैसे रंग हैं।

तैरती परछाइयाँ

अँधेरे में तिरती
आड़ी तिरछी परछाइयाँ
विचित्र हाव-भाव से
नाचती हैं
कुछ अनपूछा सा पूछती हैं
लेकिन मैं मौन हूँ।
भाग्य के सघन गगन में
बदराये चंदा की
किरणों की चाह में
जीवन की अँधियारी गलियाँ
कुछ अनपाया सा ढूँढती हैं
लेकिन मैं मौन हूँ।
किसी आशातीत सफलता की आस में
किन्हीं अकल्पनीय —
सुखों की चाह में
किसी अप्रत्याशित —
वरदान के मोह में
अन्तस् की कलियाँ
अधखिली सी खिलती हैं
लेकिन मैं मौन हूँ।
जब ये परछाइयाँ
अस्पृश्यता में भी
माँसल लगती हैं
जब मेरी कल्पनायें
ऊँची उड़ान भरती हैं
जब मैं स्वयं को भी
अपरिचित समझ उठती हूँ
तब मैं अनजाने ही

पूछ उठती हूँ
मैं कौन हूँ?
मैं क्यों मौन हूँ।
कौन है ये तैरती परछाइयाँ
किसकी हैं ये आड़ी तिरछी परछाइयाँ।

कैसा जादू

उनके कपड़े इतने सफेद हैं
कि सूरज को भी धोखा देते हैं
वे जनता को सोचने के लिए
सालों का मौका देते हैं
दिन के उजाले में भी उनके काले काम
उजले दिखाई देते हैं
रात में किए गए काले काम
न दिखाई देते हैं
न सुनाई देते हैं
काले में काला मिल कर
काले को बधाई देते हैं
उनके वादे टूट कर भी चुभते नहीं
उनके तथ्यहीन भाषण से भी
लोग ऊबते नहीं हैं
वे सालों बाद भी मिलें
तो लोग प्यार से मिलते हैं
उनकी बातें सुन-सुन कर
सिर पेण्डुलम से हिलते हैं
वे भगवान की तरह मुस्कुराते हैं
वे सुरराज की तरह थपथपाते हैं
उनके सारे काले काम कहाँ छुप जाते हैं
वे तो ऊपर से नीचे तक सफेद ही नज़र आते हैं
कैसे सारी जनता पर उनको इतना काबू है
कोई तो बताओ यह कैसा जादू है।

यादों के दीप

मैंने यादों के दीप जला कर
किया उजाला त्रिभुवन में
मेघों की उच्छृंखलता में
स्थिर रहा सदा मेरा दीपक
आई आँधी मचला अम्बर
पर रहा अटल मेरा दीपक
घनघोर घटायें घिरने पर
बिखराई ज्योति उपवन में
मैंने यादों के दीप जला कर
किया उजाला त्रिभुवन में
सृष्टि के लाँछन सह-सह कर
कष्टों की पीड़ा पी-पी कर
मैंने घावों को बंद किया
अन्तर की परतें सी-सी कर
सम्बल का बाँध बना इसको
भर ली शक्ति अपने मन में
मैंने यादों के दीप जला कर
किया उजाला त्रिभुवन में
मेरी यादों के दीपों ने
भर दिया उजाला त्रिभुवन में
यादों के अनबुझ दीपों ने
भर दी ज्योति मेरे मन में।

दिग्भ्रान्त

जब कभी बिछड़े किसी से
हम किसी भी मोड़ पर
दूर तक मुड़ मुड़ के उसको
देखते हम रह गए
जो चौराहा या दोराहा
रास्ते में आ गया
हम खड़े दिग्भ्रान्त से बस
देखते ही रह गए
बिछड़ने वाले तो अपनी
मंज़िलों से जा मिले
आस में आने की उनकी
हम खड़े ही रह गए
अब इधर जायें उधर जायें
कहाँ जायें कहो
फैसला न हो सका कुछ
सोचते ही रह गए
भ्रान्ति कैसे दूर हो पाये किसी दिग्भ्रान्त की
जब कोई अपने चले जायें
किसी को छोड़ कर
देखते ही रह गए बस खड़े दिग्भ्रान्त से
जब कभी बिछड़े किसी से
हम किसी भी मोड़ पर।

याचिका

ओ अपरिचित
कौन तुम जो
रात्रि के निस्तब्ध क्षण में
स्वप्न को आकर सजाते
ओ अपरिचित रूप के सागर बताओ
क्यों अभागिन के सताये
हृदय को आकर सताते
कर मुझे उन्मत्त छिप जाते कहाँ तुम
इक झलक देकर
विकल कर
विरह वेदन से पुरस्कृत कर
चले जाते कहाँ तुम
डूब जाती तब मधुर स्मृति में तुम्हारी
किन्तु पल-पल शून्य सा –
घिर कर सिमट कर
है बना जाता उसे
कटु यादगारों की कहानी
देख विरहिन की हृदय की भावनायें
कल्पनाओं के भवन को
मूर्त कर दो
जो अकल्पित
और अप्रत्याशित सभी कुछ
याचिका के –
रिक्त आंचल में उलट दो।

कैसा दिखावा

आज नैतिकता की परिभाषा बदल गई है
नैतिकता का ढोल पीट कर
अनैतिकता करते चले जाना
यह कैसा दिखावा है
ऊँचे-ऊँचे आदर्शों की
बड़ी-बड़ी बातें करना
बगल में छुरी रख कर
मुँह से राम राम करना
मेज़ के ऊपर धड़ पर लगे मुख पर
स्थित प्रज्ञ का मुखौटा चढ़ा कर
नीचे से रिश्वत हथियाना
भूकम्प, अकाल, महामारी
और बाढ़ के धन का बहाव
अपने घर की ओर बहाना
शक्ति रूपा नारी का अपमान
वृद्ध माता-पिता के लिए
घर में नहीं है स्थान
समाज सुधार के नाम पर
नाम कमाने के लिए
बड़े-बड़े सुझाव
अपने बच्चों के लिए
समय का अभाव
यह इन्सान पर है
किस शैतान का प्रभाव
आज मानव की हर सोच
मात्र एक छलावा है
ऊँची-ऊँची बातें करके
नीचे गिरते चले जाना

यह कैसा दिखावा है?
दूसरों के विश्वासों को नैतिकता की ओट में छलना
घर आते ही नैतिकता के मुखौटे को कील पर टांग देना
ये कैसा दिखावा है?
भिन्न-भिन्न कीलों पर टँगे
भिन्न-भिन्न मुखौटे
समय और स्थिति के हिसाब से
मुख पर चढ़ा कर
नैतिकता का दिखावा करना
क्या ये सब नहीं है खुद को छलना
ये कैसा दिखावा है?

चोर और पुलिस

1

पुलिस जी में बड़ी बू है
चोर को पकड़ लिया
माल को जकड़ लिया
ज़ोर से लात जमा कर
एक प्रश्न पूछ लिया अरे —
सारा माल तू ही खायेगा?
पुलिस वाला मैं हूँ कि तू है?

2

खेल रहे लुका छिपी
पुलिस और चोर
बात वही पुरानी
चोर पे मोर
देखना है होता है
कितने में सौदा
कितना पानी पीयेगा
जुर्म का पौधा

3

चोर के दोस्त
कुछ और चोर थे
चोर से बड़े कुछ और मोर थे
पुलिस ने पकड़ा चोर को
मोर ने पकड़ा पुलिस को
चोर का मौसेरा भाई
चोर को ले गया छुड़ा कर
पुलिस बेचारी देखती रह गई
आँखें फाड़-फाड़ कर।

अग्निशिखा

आओ इस जीवन से खेलो
बन्धु एक नई क्रीड़ा तुम
शान्तिपूर्ण मेरे जीवन में
आज जला दो अग्निशिखा तुम
छिन्न करो सब सुख स्वप्नों को
आशा पर तुषार बरसा दो
छीनो मेरे सब अपनों को
मेरे नयनों को तरसा दो
ज्वलित करो मेरे अंगों को
रोम-रोम में पावक भर दो
ध्वनित करो तुम रुदन रागिनी
कण-कण में स्वर दाहक भर दो
तोड़ो कोमल तार बीन के
कर्कशता भर दो जीवन में
दुःख निराशा और अभाव की
अग्नि जला दो इस तन-मन में
काँटों का साम्राज्य मुझे दो
फूलों के प्रति प्यार मिटा दो
गहन तिमिर का राज्य मुझे दो
अन्तस् के तम को गहरा दो
विनय सखे स्वीकार करो यह
करो नहीं कोई व्रीड़ा तुम
आओ इस जीवन से खेलो
बन्धु एक नई क्रीड़ा तुम।

एक प्रश्न

मेरे खुदा
आज तेरे से एक प्रश्न पूछती हूँ
मैंने जो चाहा था
वह तेरे पास था नहीं
या मुझे देने के लिए
तेरे हाथ ही नहीं उठ सके
न —
मैंने बहुत कुछ तो तेरे भंडार में से
लूटना नहीं चाहा था
बस थोड़ा सा प्यार और
थोड़ा सा सुकून चाहा था
थोड़ी सी इज्जत थोड़ा सा विश्वास
सिर्फ इतने में ही समाहित थी
मेरे जीने की आस
मैंने तुझसे तेरी खुदाई नहीं माँगी थी
मैंने दुनिया की रहनुमाई नहीं माँगी थी
माँगा था अपने उसूलों पर चलना
उसूलों के सहारे ही मंजिल से मिलना
उफ़! शायद यह ही मेरी
सबसे बड़ी भूल थी
तेरे पास शायद इसी चीज़ की कमी थी
या तूने मुझे देना गवारा नहीं किया?
अरे तूने मुझे टूटते देख कर
सहारा क्यों नहीं दिया?

ऐसा एकांत

दुनिया की चहल पहल में
आस-पास के शोर में
लोगों की मँडराती भीड़ में
मैं खुद को कहीं खो बैठी हूँ
मुझे ऐसा एकांत चाहिए
जिसमें मैं खुद के अन्दर झाँक कर
अपना अस्तित्व ढूँढ सकूँ
अपना व्यक्तित्व पहचान सकूँ
अपने इधर-उधर बिखरे
टुकड़े-टुकड़े बँटे
स्वत्व को समेट कर
अपने अंक में भर सकूँ
मैं जो भीड़ के इस शोर में
सब कुछ भूल बैठी हूँ
ऐसा एकाँत चाहती हूँ
जिसमें मैं गुनगुना सकूँ
कुछ सोचकर मुस्कुरा सकूँ
अँधेरों की रेशमी चादर को छू सकूँ
उसे ओढ़ कर
खुद को उसकी सलवटों के
अन्दर समेट कर
अपने अन्दर झाँक सकूँ
खुद को पहचान सकूँ।

आ जा चंदा सुख दुख बाँटें

भूल जाऊँ मैं सुख दुख सारे
और कहीं जाकर सो जाऊँ
सखी कुछ ऐसा गीत सुना दो
सब कुछ भूल कहीं खो जाऊँ
या फिर दूर गगन से चँदा
आ कर लोरी मुझे सुनाए
पूछूँ उससे क्यों रे चँदा
तू क्यों आँसू रोज़ बहाए
बहा चाँदनी के आँसू तू
किसको रोज़ याद करता है
क्या तेरा भी खोया कोई
जिसे याद कर तू रोता है
आ चंदा हम सुख दुख बाँटें
मन के बातें सुनें सुनायें
अपने सुख दुख कह कर सुन कर
कुछ सह लें कुछ अश्रु बहायें
भैया मुझे सुना दे लोरी
तेरी गोदी में सो जाऊँ
भूल जाऊँ मैं सुख दुख सारे
और कहीं जाकर खो जाऊँ।

✺

रात और दिन का सफर

रात के अँधेरों में
अनगिनत प्रश्न आकर
गूँजने लगते हैं कर्णरन्ध्रों में
तमाम आड़ी तिरछी परछाइयाँ
नर्तन करने लगती हैं
भय विस्फारित नेत्रों में ये परछाइयाँ
कभी अतीत बन कर पीछे खींचती हैं
कभी भविष्य के डरावने चित्र दिखाती हैं
कभी मुझे वर्तमान के दलदल में फँसा कर
मुझ पर व्यंग से हँसती हैं
मैं आँख-कान बंद करती हूँ
तो दिल और दिमाग में ठक ठक होने लगती है
जीवन और मृत्यु का दर्शन
साकार दर्शन देने लगता है
फिर न जाने कहाँ से प्रकट होती है
मुझे घेरे हुए तमिस्त्र को चीरती
एक ज्योर्तिमयी किरण
मेरे लिये नवप्रभात का संदेशा लाकर
मुस्कुरा कर मुझे गले लगा लेती है
मैं रात की सारी बात भुला कर
सूरज के सात घोड़ों के
रथ पर सवार होकर
फिर निकल पड़ती हूँ
दिन भर के सफर के लिये।

रात की उदासियाँ

गीत और संगीत की नदियाँ बहा दो
रात की उदासियाँ बढ़ती जा रही हैं
काव्य की साहित्य की गंगा बहा दो
रात की तारीकियाँ बढ़ती जा रही हैं
धुँधलके में छुप रहे हैं क्यों सितारे
मुँह लपेटे ढूँढते किसके सहारे
कोई मधुर धुन उनको सुनाओ
सितारों को महफिल में अपनी बुलाओ
रात की उदासियाँ बढ़ती जा रही हैं
चाँद भी क्यों झाँकता है बदलियों से
पूछता क्या मेरी भीगी अँखड़ियों से
चाँद से कह दो हमारे घर वो आये
चाँदनी का कारवाँ भी साथ लाये
रात की तारीकियाँ बढ़ती जा रही हैं
ग़र नहीं हम चाँद तारों को बतायें दिल की बातें
तो भला कैसे कटेंगी सूनी रातें
चाँद तारे मेरी महफिल को सजायें
सूनी रातों में मधुर कुछ गीत गायें
रात की उदासियाँ बढ़ती जा रही हैं।

मुखौटे और इन्सान

चढ़ा मुखौटे तरह-तरह के
ऐसे घूम रहे इन्सान
जैसे वश में उनके रहते
सारी दुनिया के भगवान
      कभी किसी को सता रहे हैं
      कभी कहीं करते उत्पात
      किसी-किसी के जीवन में ये
      भर देते अनगिन आघात
कभी किसी महकी बगिया को
करते पल भर में वीरान
      मुख से राम-राम ये रटते
      रखते छुरी बगल में दाब
      अमृत रखें जीभ के आगे
      अन्तर में तीखा तेज़ाब
हँसते मुस्काते जीवन को
बना रहे सूना शमशान
      ज़हर ज़िंदगी में भर देते
      कहते हमने भला किया
      बड़े-बड़े ऊँचे लोगों को
      इन लोगों ने जला दिया
करते ज़हर अमृतमय जीवन
फिर बन जाते हैं अनजान
चढ़ा मुखौटे तरह-तरह के
ऐसे घूम रहे इन्सान
जैसे वश में उनके रहते
सारी दुनिया के भगवान।

टूटता विश्वास

ज़िंदगी इक दुखभरा निःश्वास है
सब जगह पर टूटता विश्वास है

एक दूजे को सभी हैं छल रहे
एक दूजे के लहू पर पल रहे

दूसरों को क्या, स्वयं को छल रहे
आग में अपनी स्वयं भी जल रहे

कौन समझेगा किसी की भावना
कौन बूझेगा किसी की कामना

कौन कसको दे सहारा हाथ का
कौन दे विश्वास सच्चे साथ का

भीड़ में भी सब अकेले हो रहे
जागते में भी हैं सभी ज्यों सो रहे

जाने क्या हो कल नहीं आभास है
सब जगह पर टूटता विश्वास है।

भीड़ सिर्फ भीड़ होती है

भीड़ का कोई चेहरा नहीं होता
भीड़ सिर्फ भीड़ होती है
भीड़ में कैसा एकाकीपन होता है
सब पैरों से भागते जा रहे हैं
लेकिन किसी चेहरे में
कोई चेहरा नज़र नहीं आता
सबकी अपनी-अपनी कहानी छिपी है चेहरे में
हर विचार डूब जाता है किसी सागर गहरे में
शोर में डूबा सन्नाटा
बातों के शोर में
खोती हुई आवाज़ें
होठें की हँसी के साथ
रोती हुई आँखें
भीड़ के इस मेले में कोई दूसरे को क्या
खुद को भी नहीं समझ पाता
ऐसे में एक ठंडी सी उदासी का
दिल और दिमाग पर पहरा होता है
वीरान आँखें सिर्फ खुद को देखती हैं
भीड़ में खुद ने खुद को घेरा होता है
शायद इसी को भीड़ में
अकेला होना कहते हैं
क्योंकि भीड़ का कोई चेहरा नहीं होता
भीड़ सिर्फ भीड़ होती है।

जीवन चक्र

कैसा है यह जीवन चक्र
कभी कोई अनचीन्ही सी घटना
जीवन को खुशियों से भर जाती है
कभी कोई अनदेखी दुर्घटना
अँधियारी रात बनकर छा जाती है
फिर एकाएक कहीं से एक
नया सूरज निकलता है
और लेकर आता है
एक जगमगाता नया सवेरा
बदल जाता है जीवन चक्र
कैसा है यह जीवन चक्र
कभी-कभी ऐसे क्षण भी आते हैं
जब अपने भी पराये बन जाते हैं
और पराये ऐसे काम कर जाते हैं
जो अन्तस् में सहेज कर रखने की चीज़
यादों की मीठी धरोहर बन जाते हैं
हाथों की रेखायें
कभी सीधी कभी वक्र
कैसा है यह जीवन चक्र।

क्यों मैं अखबार पढ़ती हूँ

आजकल जब मैं अखबार पढ़ती हूँ
तो खुद से ही लड़ती हूँ
क्यों मैं अखबार पढ़ती हूँ
जिसमें छपती है एक से एक भयंकर खबर
जिनसे प्रसिद्धि पाते हैं चोर डकैत तस्कर
खबरें हैं बलात्कार की
तरह-तरह के भ्रष्टाचार की
कहानियाँ देश के कर्णधारों की
जो खाते हैं झूठी कसमें सुधारों की
सारे वायदे मुँह से निकल कर
हवा में उड़ जाते हैं
उनके सारे वायदे अपनी ओर मुड़ जाते हैं
या खबरें हैं फिल्मी सितारों की
उनकी करोडों की आय और नई कारों की
कुछ खबरें ग़रीबों की भी होती हैं
जिनमें कोई कोई कारवाला
शराब के नशे में उनहें कुचल जाता है
फिर हँसता हुआ
कचहरी से छूट कर बाहर भी आ जाता है
कविता कहानी लेख
किसी के लिये कोई स्थान नहीं है
आज के अखबार में
साहित्य के लिये कोई मकान नहीं है
घूमने दो इन्हें गरीब लेखकों के दिमाग में
कोई चटपटी खबर है तो लाओ अभी छाप दें
यही सब सोच कर
खुद से ही लड़ती हूँ
क्यों मैं अखबार पढ़ती हूँ

विज्ञापनों से भरे कागज पलट-पलट कर
पढ़ने को मिलती है वही राजनीतिज्ञों की आपसी लड़ाई
कभी एक-दूसरे की झूठी बढ़ाई या
विदेशी दबाव में आकर किये गये वायदे
क्यों हमारे जवान सीमा पर शहीद होते हैं
क्यों पढ़ूँ मैं अखबार मैं खुद से लड़ती हूँ।

अर्थ भूल गए

हमको अपना कहने वालों ने
इस तरह लूटा
दोस्त और दुश्मन का
फर्क ही करना भूल गए
अपना कहने वालों ने
ऐसे सितम ढाये हैं
दुश्मनों के सितम को
सितम कहना भूल गए
प्यार और विश्वास के बदले धोखा
हम तो धोख़े का अर्थ भूल गए
जिनको हमने –
बड़े ईमान से चाहा
वो तो ईमान का अर्थ –
भूल गए
स्वार्थ से कैसे ज़िंदगी
निभा पाते हैं वो अपने
क्या वो सचमुच
परमार्थ का अर्थ भूल गये
दुनिया के इस अनोखे मेले में
हम किंकर्त्तव्यविमूढ़ दिग्भ्रान्त से
खुद को भी भूल गए
कैसे बतायें कि हम तो –
दोस्त और दुश्मन का
फ़र्क ही करना भूल गए।

फूटते छाले

कहने को बहुत कुछ होता है
मगर हम कह नहीं पाते
सुनने को बहुत कुछ होता है
मगर हम सुन नहीं पाते
कहने और न कह पाने
सुनने और न सुन पाने की कशमकश में
न कह पाने और न सह पाने की
अजीब सी स्थिति
जब अन्तर में अपना ताना-बाना बुनती है
अपने मनचाहे और अनचाहे को चुनती है
तभी अचानक
किसी अनछुए, अनजाने अहसास से
सारा ताना-बाना हिल उठता है
अन्तर का पका घाव छिल उठता है
सारा भूत, वर्तमान और भविष्य
कहीं छूट जाता है
और
अन्तर की गहरी परतों में
बड़े जतन से छुपाया हुआ
छाला चटख कर फूट जाता है।

पाँच तत्व का वास सभी में

पूरी वसुधा ही कुटुम्ब है
बात भली है बड़ी नेक है
पाँच तत्व का वास सभी में
सबके अन्दर ख़ून एक है

फिर क्यों आपस में नफरत है
तरह-तरह के भेदभाव क्यों
क्यों हैं शिकवे और शिकायत
प्रेम प्यार का है अभाव क्यों

कहीं समस्या जात-पात की
ऊँच-नीच का प्रश्न कहीं है
रंग भेद की बात कहीं है
भाषा का व्यवधान कहीं है

अन्तर धनी और निर्धन का
बढ़ता जाता है समाज में
क्यों हैं झगड़े और लड़ाई
यही सोच कर मन उदास है

झगड़ों के कारण अनेक हैं
किन्तु उत्तर सिर्फ एक है
पाँच तत्व का वास सभी में
सबके अन्दर ख़ून एक है।

सरकारी कर्मचारी की लाचारी

बरसों से कुछ सरकारी कर्मचारियों को
सरकार के खाते से मिलता रहा है कपड़ा
पर कभी भी किसी ने यह नुक्ता नहीं पकड़ा
तो नई माँग यह है कि वर्दी का कपड़ा
मिलना चाहिये कुछ ज्यादा
सरकार को करना होगा वादा
अगली वर्दी में जेबों का कपड़ा अधिक होगा
तीन जेबें अंदर लगेंगी तीन बाहर
क्योंकि पुरानी जेबों में नये नोट समाते नहीं
कोई न समझे हम निकम्मे हैं कमाते नहीं
या हमें नये तरीके आते नहीं
बड़े-बड़े लोग, बड़े-बड़े नोट लेते हैं
छोटे-छोटे लोग थोड़े-थोड़े नोट लेते हैं
पहले नोट कम मिलते थे हम कुछ न बोले
अब नोट अधिक हैं तो जेबें भी चाहियें अधिक
हम मनवाकर रहेंगे माँग
हम नहीं है इतने भोले
सरकार को पूरा करना होगा वादा
आखिर हम भी सरकारी कर्मचारी हैं
वेतन से कुछ अधिक कमाना
हमारा भी तो हक है
आखिर हमारी भी तो अपनी लाचारी है।

निभाना पड़ेगा

उस दिन रेडियो में गाने आ रहे थे
गाने बड़े पुराने
नेता जी का छोटा बेटा सुन रहा था
साथ में गुनगुना भी रहा था
गाना था "जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा"
बेटे को गाना अच्छा लगा साथ-साथ चिल्लाया
निभाना पड़ेगा, निभाना पड़ेगा, निभाना पड़ेगा
नेता जी बड़े क्षोभ से
उठे बड़े क्रोध से
रेडियो किया बंद
बेटा रह गया दंग
ज़ोर से डाँट लगा कर लगाया एक चाँटा
चाँटे में ज़ोर था छप गया पंजा
अरे मूर्ख
अभी से ऐसी बातें सीखेगा
तो अच्छा नेता कैसे बनेगा
क्यों मेरे कलेजे पर घात करता है
मेरी बनाई परम्परा को
तोड़ने की बात करता है।

जो समाज को रौशनी दिखाये

वो सब आपस में लड़ते रहे झगड़ते रहे
एक दूजे पे कीचड़ उड़ाते रहे
अपनी किस्मत के धन से जो दिल न भरा
औरों के धन पे नज़रें गड़ाते रहे
जलन ईर्ष्या द्वेष मन में भरे
हर तरह के मुखौटे चढ़ाते रहे
बगल में छुरी दबा फिर राम कह कर
क्यों पापों की गठरी बढ़ाते रहे
सभी जानते प्रेम सबसे बड़ा धन है
क्यों वो अपना ये धन बढ़ा न सके
नफरतें दिल में भर कर रहे घूमते
क्यों दिलों से वो नफरत उड़ा न सके
जिनपे विश्वास सबसे अधिक था किया
उफ वही आज विश्वासघाती बने
बुझ रहा है अब आस का वह दीया
रौशनी जिसको राहें दिखाती रहे
काश आ जायें कुछ देवदूत कहीं से
लेकर जो स्नेह शन्ति की मशाल
समाज को रौशनी दिखाते रहें।

बहारों को हम बुलायेंगे

जख़्म कुछ ऐसे मिले हैं
जो कभी भरते नहीं
दिल भी ऐसा ही मिला
जख़्मों से हम डरते नहीं
राहें ऐसी मिली भरे हैं जिनमें काँटे ही काँटे
लिये एक आदर्श प्यार का
भर कर अपनी बाँहों में
हमने दुःख रख कर सुख ही सुख बाँटे
थोड़े अरमान थोड़े सपने साथ में लेकर
छोटी-छोटी खुशियों में खुश होने का मक़सद लेकर
दूर करने चल पड़े अँधेरों को
हाथ में लेकर गोला सूरज का
हम बुलाने चले सवेरों को
कोई वीराना सामने आया
राह रोक कर हमें डराया
तो बहारों को हम बुलायेंगे
नहीं ध्यान देना बाधा पर
मंज़िल तक पहुँच ही जायेंगे
कोई सन्नाटों में डूब न जाये
झूले खुशियों के हम झुलायेंगे।